BUDS BLOOM

2021-22

VISION

To prepare-robust, empowered, efficient, responsible and contributing citizens.

MISSION

To impart state of the art knowledge to individuals in various disciplines and to inculcate in them a high degree of social consiousness and human values, thereby enabling them to face the challenges of life with valour and conviction.

Buds Bloom

2021-22

CHIEF PATRON

Mr. Vinod Kumar Yadav
(Chairman)

Ms. Nishi Yadav
(Manager)

PATRON

Mr. Gaurav Kumar
(Director)

Mr. Akhilesh Shukla
(Principal)

Dr. P. S. Salaria
(Academic Advisor)
(Ex. Deputy Commissioner N.V.S.)

EDITORIAL BOARD

TEACHER EDITOR

Mr. Pradeep Shukla
Ms. Sangita Sharma
Mr. Jai Narayan Patel
Mr. Krishna Kumar Bajpai
Ms. Monika Shukla
Mr. Mohammad Umar
Mr. Ajay Kumar
Mr. Mukesh Singh
Mr. Sudeep Prajapati
Ms. Deepika Shukla
Mr. Ram Kishor Maurya
Mr. Durga Prasad Tiwari
Mr. Pankaj Singh

CHIEF EDITOR

Mr. Amit Singh Chandel
Mr. Sudhir Singh Salaria

DESIGN & GRAPHICS

Mr. Ranveer Srivastava
Mr. B. D. Pandey
Mr. Brijesh Kumar Yadav
Mr. Anoop Sharma
Ms. Anju Singh
Ms. Suman Gupta

Chairman's Message

Vinod Kumar Yadav

'' बच्चों को ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके जरिए उनमें गहन सोच की क्षमता विकसित हो, आपसी शांति व सौहार्द्र बढ़े, बुद्धि व चरित्र का विकास हो तथा वे आत्मनिर्भर बन सकें।

शिक्षा की आधुनिक अवधारणा के अनुरूप विद्यालयी शिक्षा के सम्पूर्ण सरगम को प्रतिबिंबित करने वाली पत्रिका ''बड्स ब्लूम'' का अग्रिमांक निश्चय ही हमारे लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है। इसके लिए मैं विद्यालय परिवार से जुड़े सभी अध्यापकों व बच्चों की प्रशंसा करता हूँ।

यह जीवन असीमित संभावनाओं से भरा हुआ है। जीवन में सफलता और संघर्ष साथ–साथ चलते हैं, इसलिए जरूरी है कि आप स्वयं पर अटूट विश्वास रखते हुए नवीन दृष्टिकोण के साथ अवसर के अनुकूल कार्य करते रहें। प्रिय बच्चों! आपका कार्य अपने जीवन में सुख–समृद्धि व संतुष्टि प्राप्त करना है। इसके लिए आप वह करें, जिसमें आप विश्वास रखते हैं। अपने कार्य के प्रति गहरी निष्ठा व प्रेम जाग्रत् करिए। अपने लक्ष्य के लिए निरंतर उद्यमशील रहिए। स्वयं को ठहरने मत दीजिए। क्योंकि आपके अधिकतम प्रयास ही शिखर तक ले जाएँगे।

किसी भी शिक्षण संस्थान की सफलता उसके द्वारा युवा मन में पैदा होने वाले नवोन्मेषी विचार होते हैं। आगे चलकर ये विचार ही कर्म के पथ–प्रदर्शक बनते हैं। विद्यालय की स्थापना के बाद से ही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि हम अपने छात्रों को न केवल सफलता की राह पर चलते हुए देखना चाहते हैं, बल्कि उन्हें अपने कार्यों में गहन ज्ञान का प्रयोग करना, विचारों की स्पष्टता बनाए रखना और दुनिया को बदलने की गहरी इच्छा महसूस कराना है।

मैं उन सभी अभिभावकों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने हमारी संस्था और उसके आदर्शों में विश्वास जताया है। साथ ही उन सभी शिक्षकों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जो सदैव बच्चों का मार्गदर्शन करने तथा उनके उत्साह व आत्मविश्वास में वृद्धि करने में मददगार बनते आए हैं।

मैं पत्रिका के सफल संपादन व प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल के समस्त सदस्यों को हृदय से आभार व शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

Manager's Message

Nishi Yadav

'' मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता उत्तम शिक्षा के साथ-साथ उत्तम चरित्र है। यही उसका बड़ा रक्षक है।''

''बड्स ब्लूम'' पत्रिका का यह नवोदित संस्करण हमारे बच्चों के लिए जीवन में दुर्गम बाधाओं को दूर करने के लिए चुनौतियों और असंख्य तरीकों को स्पष्ट करने का एक मंच है। मैं अपने बच्चों द्वारा रचनात्मक लेखों और कविताओं के माध्यम से व्यक्त किए गए गहन विचारों और भावनाओं के बहते प्रवाह को देखकर अभिभूत हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप इसी तरह अपनी वैज्ञानिक व कलात्मक प्रतिभा का समुन्नयन करते हुए हम सभी को गौरवान्वित करते रहेंगे।

मनुष्य का जीवन एक महानदी की भाँति है, जो अपने बहाव द्वारा नवीन दिशाओं में अपनी राह बना लेती है। बदलते परिदृश्य में अपने जीवन को वही सार्थक बना सकता है, जो उसे एक अवसर की तरह लेता है। यह जिंदगी सिर्फ सफलता पाने और आनंद हासिल करने के लिए है। खुद को निराश और असफल बनाकर हम जिंदगी का अपमान करते हैं। इसलिए समय का सदुपयोग सदा विविध कला–कौशलों को सीखते हुए मानवीय गुणों को आत्मसात करने में लगाना चाहिए।

हमारे लिए प्रत्येक बच्चा विशेष है और हम उसके सर्वांगीण विकास की जिम्मेदारी लेते हैं। यह विद्यालय सदा बच्चों के बीच नैतिक मूल्यों व जिम्मेदारियों को विकसित करने का प्रयास करता है, ताकि वे सभी मिलकर विसंगतियों से मुक्त समाज का निर्माण कर सकें। यहाँ बच्चों के सपनों को पंख देने के लिए तैयार किया जाता है। उन्हें उनके रुचिकर कार्यों व आकर्षित करने वाले विषयों पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में मदद की जाती है, ताकि उनकी दृष्टि को नया आकार मिले।

यह पत्रिका निश्चित रूप से विद्यालय के प्रतिष्ठित सदस्यों द्वारा किए गए अथक परिश्रम को उजागर करती है। इसके लिए मैं आप सभी को हृदय से धन्यवाद व शुभकामनाएँ ज्ञापित करती हूँ। आप सभी इसी तरह आशा व उत्साह से भरे हुए नौनिहालों का भविष्य गढ़ते रहें। आपका हर प्रयास सफलता की नई इबारत बने।

पुनः आप सभी अभिभावकों, शिक्षकों व बच्चों की मंगलमय भविष्य की शुभेच्छाओं के साथ!

Director's Pen

Gaurav Kumar

"To accomplish great things we must not only act but also dream, not only plan but also believe".

Welcome to all the readers of "Buds Bloom 2021-22", the Annual School Magazine.

Education is not just about subjects that are learnt and taught with in the fort walls of Educational Institutes. It is a lifelong practice that undoubtedly exciting, if one wishes to excellence. Learners, Educators and all stake holders have to understand that education is not confine to books and classrooms only. Students should be motivated to be inquisitive promoting innovation in education. "Learning by doing" should be Mantra of an Educational Institute.

Radiant ensures that children get an enriching environment to enhance creativity in them.

Looking forward another rewarding session. I hope our students will scale new heights.

Principal's Desk

Akhilesh Shukla

Education is the process of walking up to life and its mysteries.

Another eventful year passed giving lots of lessons to brood over. Covid pandemic shattered education globally but innovative approach helped to combat the disastrous situation effectively. Eventually, the world experienced paradigm shift in the field of education to cope up with the changing scenario.

Learning is the acquisition of knowledge but it should not be confine to classrooms only. Students should get opportunity for independent learning outcomes. Pandemic has brought about revolutionary changes in the field of education. It has converted conventional classrooms into digital ones.

I am deeply indebted to school staff, students & parents for their constant support in our endeavor to shift classrooms from school to homes of the learners. Thanks to technology, we could keep our students well connected with school and continue all the academic activities uninterrupted.

To showcase, the creativity of our students, we are coming up with 12th edition of Annual School Magazine, Buds Bloom 21-22.

I hope readers will find it worth reading.

Editors' Note

Sudhir Singh Salaria

Amit Singh Chandel

On behalf of editorial team, I am glad to present 12th edition of Annual School Magazine, "Buds Bloom".

This edition was made possible due to immense support and guidance given to us by our Director, Mr. Gaurav Kumar & Principal, Mr. A. Shukla.

The school magazine provides the teachers and students, a democratic platform to showcase their flair.

It shows the activities of the students in the field of their extra curricular activities and academic ventures. The magazine prepare students for their future. It gives them training for creativity and critical thinking.

We hope the magazine would give our readers a perfect tableau of the school activities.

''जीवन किसी को स्थायी सम्पत्ति के रूप में नहीं मिला है। वह तो केवल प्रयोग के लिए है।''

छात्रों के साहित्यिक व कलात्मक कौशल की बहुरंगी अभिव्यक्ति के लिए एक मंच के रूप में कार्य करने वाली ''बड्स ब्लूम'' का यह अभिनव संस्करण हम सभी के लिए विलक्षण आनंद का स्रोत है। मैं आप सभी पाठकों को बच्चों की नैसर्गिक कला में शामिल करते हुए इस पत्रिका को पढ़ने के लिए आमंत्रित करता हूँ। आपकी प्रशंसा पाकर बच्चों की भावनाओं के रंगों में निश्चय ही वृद्धि होगी।

मैं पत्रिका प्रकाशन में समय–समय पर अपने अमूल्य सुझाव व मार्गदर्शन देने हेतु संस्थान के सम्मानितगण शैक्षणिक सलाहकार डॉ. पी. एस. सलारिया, निदेशक श्री गौरव कुमार जी, प्रधानाचार्य श्री अखिलेश शुक्ला जी के प्रति उपकृत हूँ। साथ ही पत्रिका के संपादन कार्य में संलग्न रहे सभी अध्यापक बंधुओं का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

पुनः आप सभी का आभार व अभिनन्दन!

EDITORIAL TEAM

Teacher (L-R) : (Sitting)

Mr. Pradeep Shukla, Mr. Amit Singh Chandel, Mr. R. K. Maurya, Mr. Akhilesh Shukla (Principal) Ms. Sangita Sharma, Ms. Monika Shukla, Ms. Deepika Shukla.

Teacher (L-R) : (Standing)

Mr. Durga Prasad Tiwari, Mr. Pankaj Singh, Mr. Sudhir Singh Salaria, Mr. Ajay Kumar, Mr. Jai Narayan Patel, Mr. K. K. Bajpai, Mr. Mohammad Umar.

INDEX

Content	Page No.
World of Pre-Primers	01-02
English Section	03-17
Service Before Self	03
Dream : A Magic	04
The Rain Would Never Stop	05
Life Is What You Make Of It	06
Transhumanism	07-08
Artificial Intelligence; Changing The World	09
Exam Pressure	09
Are Eggs Vegetarian!	10
Cage Age Privilege	11
I Come From Two India....	12
Race Of Competitive Exams	13
Stay Safe, Be Prepared	13
It's Always Seems Impossible Until It's Done	14
Dream Destination	14
Maths, Maths, Maths!	14
The True Idea Of Feminism	15
My New School Uniform	16
My Thank You Card	16
National Festivals	16
My Online Certificate	16
The Christmas Party In My School	16
English Vinglish	16
And The Story Continues	17
In the Eyes of Stake Holders...	18
Annual Report	19
हिंदी अनुभाग	**20-32**
ये मंजिल नहीं सफर है मेरा	20
साहित्य का जीवन से अभिन्न संबंध	21
ऑनलाइन गेम्स की लत	22
हम धर्मनिरपेक्ष हैं या पंथनिरपेक्ष	23
आज के संदर्भ में जैन धर्म	24
अजेय योद्धा जनरल बिपिन रावत	25
कृतज्ञता	25
गाँधी जी समझाओ न	26
पहली बार जब मैंने...	26
पिता का संघर्ष	27
मेरे स्कूल का पहला दिन	27

Content	Page No.
नारी मेरा नाम	28
दिल करता है	28
जिन्दगी और परिश्रम	28
जीवन का सार	28
गर्मी का एक दिन	29
जीवन का सूत्र	29
मनुष्य के चार वर्ग	29
कोई कहता है	30
कुछ करना है	30
मिलकर पेड़ लगाएँ	30
मंजिल का सफर	30
कोराना काल	31
फुटपाथ पर सोया आदमी	31
चलते रहो	31
मानवता का करें परागण	32
धरती माँ	32
शिक्षक और शिक्षण प्रक्रिया	33
AISSE (2020-21)	34
AISSCE (2020-21)	34
Annual Sports Meet	35-36
School In Action	37-38
Celebration	39
Inter House Champions	40
Student Council	41
Adieu	42-45
School Facilitators	46-47
Creative Strokes	48-49

RAJAT MISHRA (5-C)

DIKSHA MAURYA (5-D)

SAMIA HUSSAIN (3-A)

ADITI TRIPATHI (5-A)

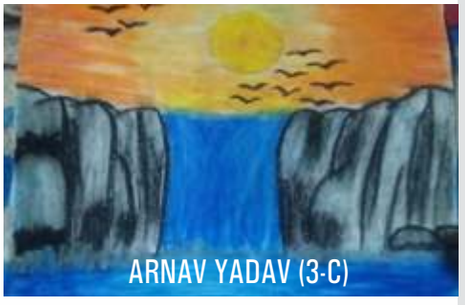
ARNAV YADAV (3-C)

GARGI GUPTA (5-D)

ANCHAL YADAV (2-C)

RIYA AGRAHARI (5-D)

ANUSHKA YADAV (5-D)

ISHITA UPADHYAY (5-B)

FATIMA (5-D)

RAHAT AFREEN (5-B)

RUDRA PRAKASH AGRAHARI (1-A)

VAISHNAVI YADAV (4-B)

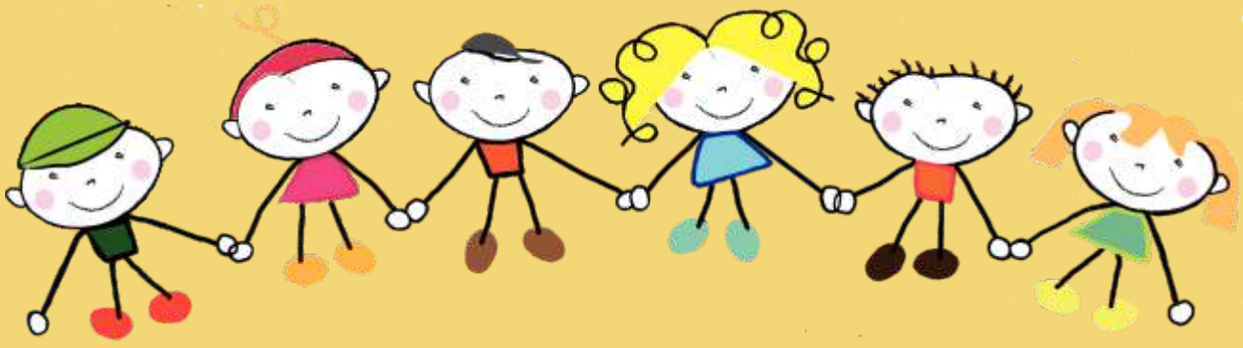

School No. : 70086 Aff. No. 2130562

RADIANT CENTRAL CHILDREN ACADEMY

SR SEC SCHOOL AFFILIATED TO C.B.S.E. NEW DELHI

JALALPUR-AMBEDKAR NAGAR

Mob.: 9415716781, 9450489067

Email : radiantcollege@gmail.com

Website : www.radiantacademy.in

WORLD OF PRE-PRIMERS

SERVICE BEFORE SELF

Service Before Self means to think of the others living in this world, rather than thinking and working for one's own selfish motives.

The Sun and Moon provide light and energy for the entire universe.

Similarly the rivers and the trees provide us with water, shade and also shelter to the birds and animals

Nobody is unfamiliar with great people like Mahatma Gandhi, Gautam Buddha and Acharya Vinoba Bhave.

These people are remembered because their motto was 'Service Before Self'. They never thought of themselves.

Man has certain duties to perform for society. The first duty of every human being is to help others in what-ever way they can while at the same time not thinking of their own personal comfort and benefits. He should be ready to help all those who are in need of it because that is the best way to serve humanity.

Soldiers work tirelessly for our country and protect us. They do not care for their lives, but fight our enemies at the border. If they had not been there to protect us from our enemies, we would never be able to sleep in peace. One can help others by providing food, shelter and clothing or just by giving emotional support to those who are facing a bad time in their lives. One can donate money to leprosy centers, orphanages or old age homes. It is mentioned in our holy books that those who help others are true saints.

Mother Teresa had worked for the people and the weaker sections of the society and left her footprints in the sand of time. She spent all her life serving the poor, particularly the leprosy patients in Kolkata. She sacrificed all comforts of her life, left her home and family just to serve the society.

A thief steals goods, a criminal commits crime because their self comes before service so they are a curse for society. No laws would be applicable if self comes before service.

If we think of only ourselves and our needs, the others will not enjoy their rights. So being a good citizen we should always work while keeping in mind that service comes before self.

Thus, we should learn the lesson from such people and should be ready to help others in whatever way we can because it also helps man to get mental peace.

PALLAVI YADAV (VIII-C)

DREAM : A MAGIC

Once I was going for a walk with my dog to the market. On the way there was a dense forest. It was a lazy afternoon. We had just shifted to Jalalpur. I had two dogs Moti and Maggi. I loved playing with them.

Suddenly I heard a sound from the forest as if someone was singing a magic spell. I got scared because it was said that there were witches in that forest. I just tried to ignore it and walked on. When my dogs started barking in the direction of the forest. I looked there and I could recognize the thing. My dogs ran after it. I thought it was a cat.

I was very scared. I became thirsty, and was only thinking of water.

After walking a little while I reached a pond. Till now I had never seen a pond in the forest map. But I gulped at least five liters of water. Then I thought of the foggy days in Jalalpur when there was a landslide. I don't understand why on that sunny day the fog suddenly came and the land began to shake. Then it even started raining and I felt very cold. The weather was becoming erratic. It stopped raining, the trees were bowing with fruits but there was no sign of fog or my dogs.

I thought twice, thrice, then hopelessly just sat on the ground and closed my eyes. A fear ran down my spine. All of sudden I felt heavy and fell to the ground.

I opened my eyes and I was in my bedroom. My mother was shouting at me, “What are you doing, get up. Don't you want to go to school?” I realized my dogs, Moti and Maggi were sitting beside my bed, waiting for me to getup.

I realized SOMETHING and started smiling at my mother and my dogs. They started looking at me as if they need the answer for my smile.

But it remained a suspense for them.

ISHITA PANDEY (VIII-D)

THE RAIN WOULD NEVER STOP

The whole sky was covered with clouds, dark and black. Thunder and lightning together with the heavy shower made the atmosphere ghastlier. Reaching home appeared a big hassle to us. We were trying to walk as fast as we could but then our clothes wet, due to rain, were a hindrance to our doing that. We had gone to attend our guitar classes which were postponed due to bad weather.

There was no trace of human existence on the road and it seemed as if my friend and I were the only survivors. Beside the road was a lake with empty boats floating and drops of rain causing ripples, which at that moment seemed as a terrible sound. On the other side were Shops with their shutters drawn and it looked as if they were never there. There was utter silence on the road and we could hear every horrible sound of nature.

My friend and I were literally walking on the road. Suddenly, I felt as if someone was walking behind us.

After sometime I felt that he was actually following us. I murmured to my friend, "Are you thinking the same what I am thinking?" and she nodded in agreement. Impulsively, our pace quickened. With our progressing steps the degree of our fear rose to such an extent that we did not even realise when we had started running.

We heard him calling us but our fear had cast a barrier against our ears. All we could hear was that he was shouting something.

Summing up a little courage, we turned to see who he was, but as aforesaid, it was too foggy. We could not recognise him. We increased our speed a bit more. Suddenly, to our surprise, we heard him calling our names, which frightened us. Somehow, curve after curve, the hilly road reminded me of a roller coaster. Thundering and roaring of storm grew worse with time. It had been the wildest storm I had ever seen.

The man behind us grew impatient as we were trying our best to avoid him. To our relief, we had reached the residential area. Seeing the door of my house, I rushed towards it along with my friend. I shut the door behind me, I was out of breath. My mother seeing my expression, stood up in surprise.

The first thing she asked me was, "What happened? Why are you alone? Where is your brother?".

Before I could reply, the door flew open, and my brother stood there with two umbrellas in hand.

The pieces fell into place and I realized that all along we had been running away in terror, from my brother who had actually come to help us.

My brother was furious. He shouted at us while my friend and I could not control our laughter.

HARSHIT YADAV (VIII-C)

LIFE IS WHAT YOU MAKE OF IT

What most people tend to forget is that we have unbelievable control over our destiny. -Bill Gove

I came across these lines when I was quite young and at that time I probably did not understand the real meaning. But now as I am on the threshold of leaving the school and entering a new phase of my life, I cannot help but think about the wisdom that these lines hold for me.

In fact, even now, at this moment if I ponder at where I stand in life today, it is all my actions. I cannot and should not possibly shift the blame- or for that matter even the credit-for my failures and achievements, on other people and circumstances.

Gautam Buddha had said "All that we are is the result of what we have thought……if a man speaks or acts with an evil thought, sufferings follow him…..if a man speaks or acts with a good thought, happiness follows him".

Humans have a tendency to blame others for their failure and to take credit for all achievements. That is probably the easier way out but definitely not the right way. The correct way would be to accept our failure and then to use them as stepping stones to success. The sweet taste of success can be felt by only those who have been pulled down time and again, only resulting in their standing up stronger.

History has witnessed success and achievements of the icons, whom we so admire. The likes of Abrahamm Lincoln, Nelson Mandela, Aung San Su Ki, Thomas Alva Edison, Helen Keller, John Milton, Beethoven, Mahatma Gandhi, Newton etc. who fought against all odds and emerged triumphant. Had they left their futures in the hands of destiny, their names would have been lost in the history but they moulded their lives the way they wanted it. Destiny, of course plays a role but what matters more is how you manipulate your shortcomings to your advantage.

Last year, a little before our final examinations, I had to attend my cousin's marriage. This provided a good excuse for me for not faring well in my examinations as had been expected from me. For once, even my parents did not object and I was saved from their admonitions. But strangely so, I was still quite guilty. My conscience kept nagging me to at least admit my mistake to myself. I had a lot of excuses to convince others for my inability but I found it very hard to convince myself. After all, I was the one to face the consequence of failure as people just see the end result rather than reason behind the result.

This was just a small example. Time and again, we notice people grumbling, and cribbing about their friends, neighborhood, community, country etc. This applies to people in all walks of life. Instead of changing ourselves and making a difference, we would rather, continue to wait for somebody else to come and clean and repair the damage done by us.

It is only a matter of realization; each one of us alone contributes to our own welfare. People like Martin Luther King Jr. or Subhash Chandra Bose were also human beings with flesh and blood. They realized that if they change the world, changes will happen in them as well. They left their footsteps for others to follow. We can do the same by just remembering that life is what we make of it.

RAJ VARDHAN SINGH (IX-C)

TRANSHUMANISM :

Transhumanism is the idea that humans can evolve new physical and mental capabilities, particularly through the use of science and engineering. In a literal sense, all of us are transhumans already, because we've extended our natural capabilities with technology. This began with simple inventions like clothing in Stone Age times, but you can extend that to people today walking around with artificial valves and pacemakers in their hearts and implanted pumps that infuse them with drugs, such as insulin. The concept can be extended to include communication equipment that we wear, such as smartphones, or vehicles that we enter, such as cars and aircraft.

Biotechnology is developing at an ever-increasing rate. Bionic limbs are being tested, arms and legs that a wearer can control via thoughts from his or her brain. Biomedical devices are becoming more dependent on computing capability.

There may be a theoretical limit to computing power, but it is at least a few decades before we reach it. Along with sheer computing power, developments such as nanotechnology, new genetic engineering methods, and integration of biological and electronic technology will add to what is possible. Thus, at some point in the decades to come, we can expect various technologies that today seem like science fiction, such as a bionic artificial heart that can replace a diseased heart and run indefinitely. Or maybe we will develop the ability to grow a genetically-matched human heart in a host animal such as a pig or sheep.

Even if bionic parts and the digitization of the human mind may one day turn humans into cyborgs, this would still not represent biological evolution in the strict

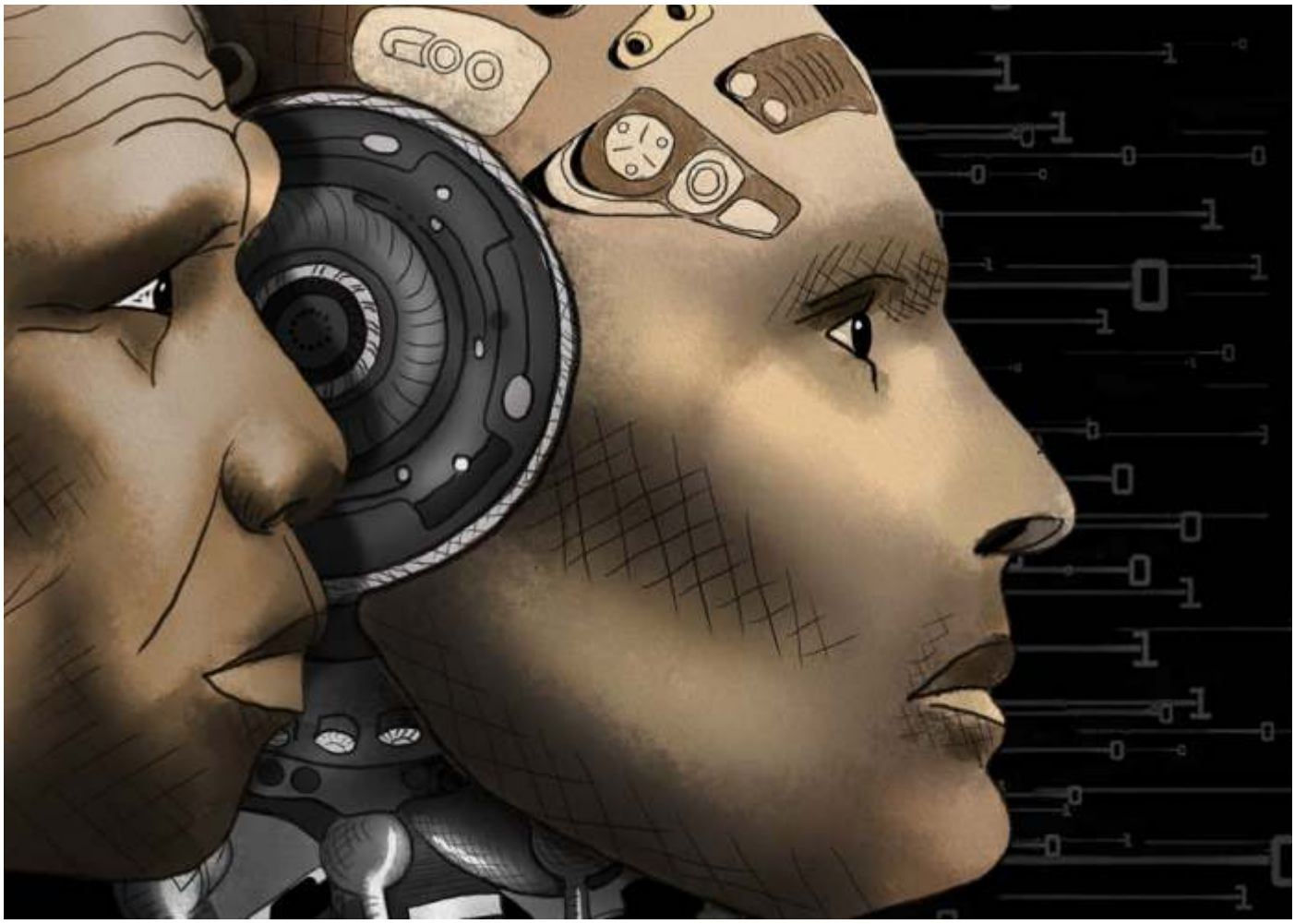

EVOLUTION THROUGH TECHNOLOGY

sense, since that refers only to genetic changes. Even gene therapy, in which diseased cells in a patient's body can receive new genetic instructions, occurs without alteration to the heritable genome inside the gametes (sperm and eggs).

One day the human genome could be altered in a heritable way with a DNA editing system called CRISPR. Scientists are already editing genomes of other organisms using CRISPR technology. Researchers in the US and the UK have created experimental male mosquitos of the species that carries the malaria parasite. The engineered genome of these mosquitos is able to deliver what's called a gene drive, which can spread a trait to other mosquitos of the same species, such as the ability to make antibodies against the malaria parasite. What the CRISPR coding does is, copy the anti-malaria gene from one chromosome to the other matching chromosome. As a result, nearly 100 percent of an engineered mosquito's offspring will have the antimalarial gene, rather than the 50 percent that we would expect with Mendelian genetics. In this way, in the course of a single season, nearly the entire population of a species in a region, the Brazilian rain forest for instance, can be altered to carry the new gene. If we can do this with insects, similar things could also be done with humans, in which case we're talking about genetic changes passed through gametes to new generations, and thus true biological evolution. Why might we go down such a path?

ABHISHEK SINGH (PGT-BIO)

ARTIFICIAL INTELLIGENCE; CHANGING THE WORLD

A simple question asked by mathematician Alan Turing changed the whole history completely that "Can machines think?" It might have sounded weird at that time, but now in the very modern era, it is becoming true. And the biggest role here is played by artificial intelligence or AI.

So now a question arises in our mind that what basically the AI mean? AI is a wide ranging branch of Computer Science which is concerned with building smart machines which is capable of performing tasks that typically require human intelligence, such as decision making, object detection, solving complete problems and so on. Some of the examples of AI are- Siri, google assistant, self-driving cars, robots etc.

In the recent past AI has developed so many machines and robots that are being used in a wide range of fields including health care, robotics, education, marketing, business analytics, banking and many more. It is so unbelievable that the AI has found its way into our lives that we don't even realize that we use it all the time, for instance- we all use it all the time, for instance- we all use Facebook, it always gives us content based on our interest, that is where the AI works. The AI is divided in three different stages: The first one is artificial narrow intelligence, also known as weak AI. It is capable to perform only some particular tasks. It cannot work without human interaction. For Example-Alexa, face verification in mobile phones. And the second one is 'Artificial General Intelligence' also known as strong AI. It can solve tasks and find solution without human interaction The example is self-driving cars. And the third one is 'Artificial Super Intelligence'. But currently it is seen as Hypothetical information as depicted in movies and science fiction books where the machines will rule over the world. Elon Musk believes that artificial super intelligence will take over the world by 2040. The future world is going to be full of machines, the way the AI is growing very rapidly.

RASHMI MISHRA (XI-A)

EXAM PRESSURE

A four years old child takes a bag full of books hanging on his shoulder and works hard to get good marks in the exam. Later on, slowly-slowly these small exam changes into competition and child changes into teenager but continues working hard to get good rank in exams. After failing one or two times or not getting good marks creates a pressure on the child. This pressure leads to exam pressure.

Exam pressure is something when you are worried about how well you do in the exam. You find it hard to understand what you are studying. It can lead to many different mental illness, into depression and anxiety, panic attacks, low self-concentration, self-harming and suicidal thoughts.

Now the question is that how can family or friends know that their child is suffering from exam pressure? When you lose touch with friends, have trouble in taking decisions, lose your interests and hobbies and start maintaining distances from others, it may be due to exam pressure.

Every parent should check that they are not taking extra pressure on themselves. Thousands of students take extreme steps like, suicide per year due to exam pressure. They must learn that exams are a part of life, not a life. It is very important to get rid of exam pressure but the question is that how to get rid of exam pressure? There are many ways. First of all, stick to a routine by eating and sleeping at the same time each day, take proper counselling, maintain a good relation with family and friends. Self-motivation is also needed. Talk to someone, eat a proper diet and exercise regularly.

Our teenagers, our youths are the future of our country. Hard work is the key to success. Taking pressure for any work can't help you to attain success. Charles Dicken's said, "Never do tomorrow what you can do today".

Life never ends with an exam. Every day we are facing lots of exams. So prepare yourself for these exams. Try not to worry a lot.

VAIDEHI SHUKLA (XII-C)

ARE EGGS VEGETARIAN !

"To attract more consumers, commercially sold eggs are mostly labelled as vegetarian".

But it still is a topic of discussion: Eggs are vegetarian or non-vegetarian.

Pramukh Swami Maharaj has very logically argued against the popular notion that eggs can be vegetarian as well. He says "They call eggs vegetarian but do they grow on trees? No, they come from hens.

Commercially produced eggs do not require cocks or male chickens. These eggs are not meant for reproduction but for table. These unfertilized eggs are called vegetarian eggs. Fertilized or unfertilized, no eggs can be called vegetarian. The ovum is still there at its centre. If that ovum were to join the male sperm, it would become a fertilized egg and after proper incubation a baby chick would be born from the same egg.

For mass production of eggs, only hens are reared, male chickens are kept away. Thus eggs laid, remain unfertilized but that does not make them vegetarian. Each egg still contains the ovum.

Scientist Philip J. Bell writes in his book (Poultry Feeds and Nutrition), "All the metabolic activities are found in unfertilized commercially produced eggs as well. When breathing stops the eggs began to decay. Eggs are eaten for their egg yolk and egg white but in reality these are produced for the protection of a potential unborn chick. Once a girl reaches puberty her ovaries release an ovum every 28-30 days. In the same way, hen's ovary release an ovum every 22-24 hours, after the bird reaches puberty".

The menstrual cycle repeats itself in 22-24 days. The only difference is, whereas a human child develops in its mother's womb, hen's young develops in an egg shell, outside her womb. This eggs laid by hen may be fertilized or unfertilized.

Thus, a hen's egg can be compared with the monthly menstruation in a woman. Both have egg, a developing womb and the necessary elements to provide nutrition for the unborn child or chick.

Would you still consider these unfertilized egg as vegetarian?

ADITYA KUMAR TGT (SCIENCE)

CAGE AGE PRIVILEGE

It is often said that nothing is constant in this world except change. Yet humans are evolutionarily predisposed to resist change because of the risk associated with it. COVID-19 has changed what is normal for at least a few years, and it has been a true test of our inertia against change as humans.

Over the last few months, I have had plenty of opportunities to reflect on the nature of change COVID has brought with itself, and I have concluded that while it is extremely radical in nature, we as humans have found the resilience in ourselves that was key for our survival. The change can be summarised as 'CAGE- AGE-PRIVILEGE' in my opinion.

With the first red flags that signalled a bleak future, we started with the first few waves of lockdowns and janta curfews. While we objectively knew that something was wrong, and there was reason to be afraid, none of us could have foreseen what followed. World economies came to a standstill as the curfews and lockdowns kept extending without any end in sight.

With a nationwide shutdown that affected everything, I was especially concerned about my students and how this disruption could potentially impact their education. But learning and adapting is a part of human nature. The teaching fraternity worldwide came up with their own versions of education continuity. The world started to bounce back through online means.

Radiant School, Jalalpur shifted to online classes, and teachers and students went from online newbies to expert navigators and facilitators in a metaphorical wink. While we are all still struggling with the logistics of a truly functional 100% online classrooms, the progress has already started and every day the efficiency of these online classes is increasing. I believe we also matured in terms of our appreciation towards the frontline workers in our society, like medical, defence, law and order and other essential services' staff, as their contributions became more apparent in the face of danger and risk. A lot of us also grew in the sense of finding new yet healthy routines, workflows, and diets to keep ourselves healthy, fit and productive, despite being caged. Navigating through the last few rough months has given me the ability to appreciate what I have and not mourn what I do not. A lot of individuals and families have lost professionally, financially, and even personally in the form of near and dear ones. The rest of us who have had perfect health, food to eat, amenities, somewhat continuous education and jobs are the lucky ones. Anyone who got to stay with their family, lead a perfectly healthy life, pick up a hobby, polish their online skills, etc.: is privileged in this day and age. More importantly, I have understood the importance of perspectives and points of view. Having a home to stay during lockdown period, has changed from being a "cage' to a 'privilege' as my perspective has changed over time. Not everyone has had all of the above privileges that I listed. It is made richer by always appreciating the silver lining in the darkest of the clouds.

SANTOSH UPADHYAY PGT (BIO)

I COME FROM TWO INDIA.....

"We are a land of belonging rather than of blood".

These lines by Senior Congressmen Shashi Tharoor reminds me of that how a billion people with different background, different religion, caste, color, creed etc. are living together with peace and harmony since ages. Wow this seems, great and our heart will say, "Incredible India". This is the real India where I come from.

There is another India which is filled with hate, discrimination violence, communal violence and more. Unity is our biggest strength but unfortunately from past few decades we are fighting for religion, language, reason, cast etc. Even the political leaders are cashing on it. I am also from India where we feel proud of troops on border for our security and there are some, who asks proofs of surgical strikes. I come from that India where we are having the largest number of working population under 30, yet we are listening to the leaders of 75 years of age and following their 150 years old ideas. I come from India where the poor mother has nothing to cook for her family and rich mother find it hard to select among lot of vegetables on the table?

I come from India where Gandhi, our beloved father of nation, is worshipped and there is another India where people like, Nathu Ram Godse is described as 'Martyr'. I come from an India where people like Bhagat Singh sacrificed their life for the country and in another India where "India, you will break into pieces" slogans are chanted in a reputed university.

I want you people to figure out that which India should we be proud of? An incredible India or a divided India?

ANSH MISHRA (XI-A)

RACE OF COMPETITIVE EXAMS

In this era of competition, students have to keep running to succeed in life. Competition instills fighting spirit among them. It teaches us to learn the meaning of life. To get success, one must possess strong will power, persistent, perseverance and devotion.

History is repeated with stories of people who, despite living in adverse circumstances, have earned great success. This all becomes possible due to struggle, born from the sheer determination to attain one's goal. Competition sparks creativity, increases productivity and helps everyone to assess their strengths and weakness. The inner strength and courage of a person does not let him down and provides new ways to keep progressing. The competitive exams build confidence and develop skills among the students.

There is another aspect of this rat race of competitive exams too. Students get depressed, anxious and focus totally on cramming and rote rehearsals. It lessens their effectiveness. But, a positive outlook towards the competition and intense desire to attain the goal can overcome all other adversities. These exams, in the last, make us learn the value of hard work.

Hellen Keller has said, "Character cannot be developed in safe and quiet situations. Only through experience of trail and sufferings, the soul can be strengthened, ambition inspired and success achieved."

The youth of the new generations are proving again and again that it is possible to achieve a goal with determined outlook and sincere efforts.

PRATEEKSHA MISHRA (XI-A)

STAY SAFE, BE PREPARED

We may be young or old,
But we must be bold,
Against the enemy untold,
We can't go to malls,
Because this virus is a-scaring all,
Standing in front of us ghastly and tall,

If you have to go out, think twice,
Wear your mask, be wise,
After coming home, sanitise,
And wash your hands thrice,
Covid-19 is the name,
It is playing a hide-and-seek game,
By following the rules, we can end its game.

SHREYA YADAV (IX-I)

IT'S ALWAYS SEEMS IMPOSSIBLE

UNTIL IT'S DONE

The word "IMPOSSIBLE" has no significance in our lives but before starting a new work the word "IMPOSSIBLE" comes in our mind. The word impossible force us to take the step back instead of moving forward. It lowers our potential and confidence.

In this world, everything is possible, provided we have willpower, determination, consistency and punctuality. In the year 1983, if Kapildev have thought that it is impossible to defeat the best playing eleven of West Indies then India wouldn't have won their first world cup. Dictionary says "Impossible is something that is not possible" but the word itself says "IM POSSIBLE".

A. P. J. Abdul Kalam was not having enough money to make the first rocket but he made the rocket in different small units and transported these units through cycle and bullock-carts. He assembled the parts in a small church and make it possible to launch the first rocket of India. If A.P.J. Abdul Kalam hadn't taken initiative, the space science in India wouldn't have made its mark.

Napoleon Bonaparte had said that the word impossible is in

AYUSH SINGH (XI-A)

DREAM DESTINATION

I want to travel to a place
Where no one is greedy for money and status,
Where everyone is having a true smile on their face,
where the people can afford three times food for their family.
Where people help each other without expecting
anything in return,
Where people stay real,
Where people are connected,
Not on phone but in person,
Where people feel safe to sleep,
Where people won't harm each other.
Where we are valued more than things,
Where people love each other,
Stay healthy and calm.

RASHIKA SINGH (IX-A)

MATHS, MATHS, MATHS!

Down with old Pythagoras,
And down with rotten maths
Down with Archimedes
And drown him at the baths.
If anyone had to do it,
I'd make sure it was me,
First I'd wholly immerse him,
Then kick him up a tree.
When he had been disposed of,
I'd turn on old Pythagoras,
I'd drag him through a holly bush,
And he'd come out like a rag.
Now my pipe dream's over,
And I've nothing more to say,
Expect that Maths still lives on,
To be taught another day.

PRASHANT PANDEY (XI-B)

THE TRUE IDEA OF FEMINISM

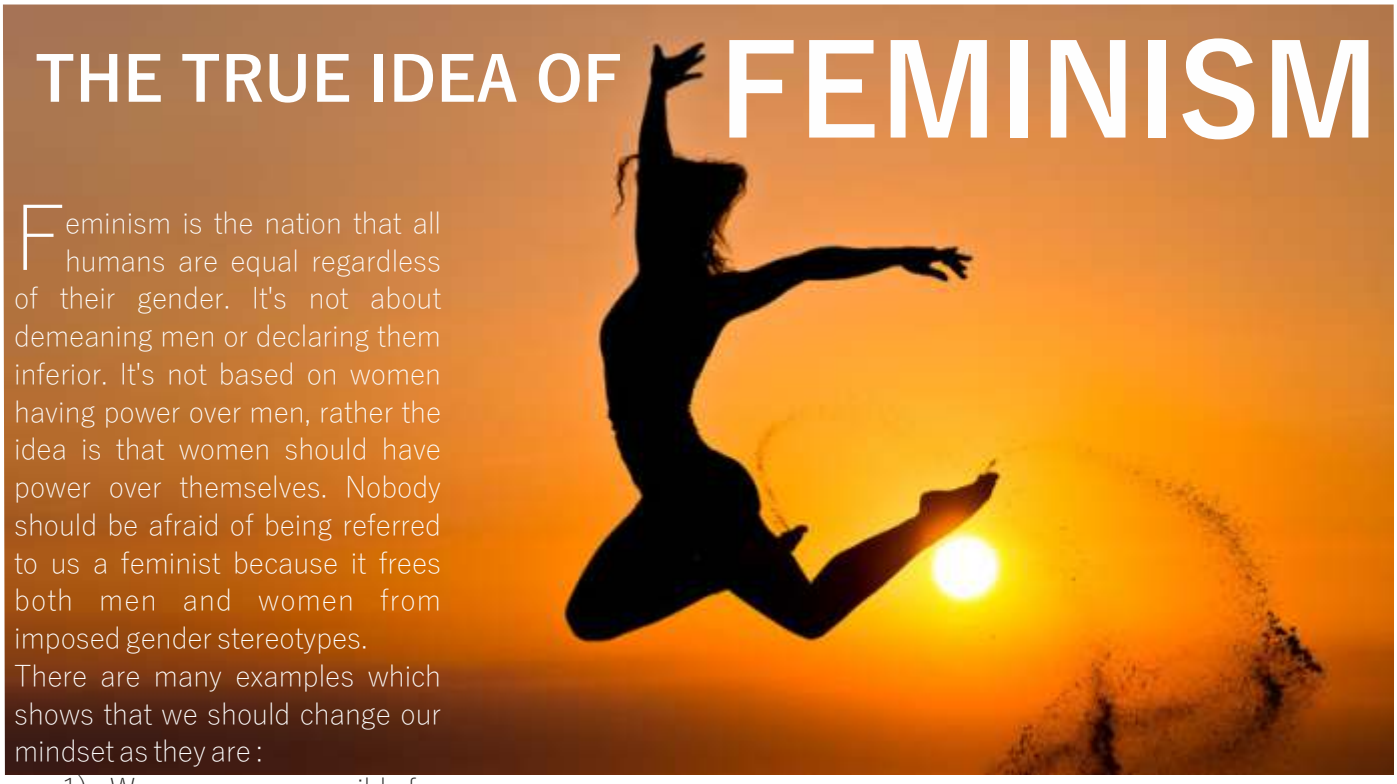

Feminism is the nation that all humans are equal regardless of their gender. It's not about demeaning men or declaring them inferior. It's not based on women having power over men, rather the idea is that women should have power over themselves. Nobody should be afraid of being referred to us a feminist because it frees both men and women from imposed gender stereotypes.

There are many examples which shows that we should change our mindset as they are :

1) Women are responsible for up to 2/3 of global working hours, but they earn only 1/10 of the global income.
2) 2/3 of all children denied school are girls & 75% of the world 876 million illiterate adults are women.
3) Women hold only 21% of the world's parliamentary seats and only 8% of the world's cabinet ministers are women.
4) Only 66% of countries have achieved gender party in primary education.

We live in the society where people have very bad and negative thoughts as – "If our clothes are decent enough"? If not, our moral character is questioned. If we laugh more, people get wrong idea. We work as hard as any men. But when it comes to promotion? No! She's not up to mark.

Why do women have to pretend to be something that they are not? Why do we have to pretend to be stupid when we're not stupid? Why do we have to pretend to be helpless when we're not helpless?

As I say, Feminism isn't about making women stronger, women are already strong, its about changing the way the world perceives that strength. "It is not a competition between men and women. It is a collaboration".

Men also suffer a lot not only women, absolutely they don't have any restriction but they are told that they are men, if they are never afraid, never cry, have money and can go with violence.

Destroy the idea that men should respect women because we are their daughters, mothers and sisters. Reinforce the idea that men should respect women because we are human beings. Feminism, the belief in social, economic and political equality of the selves.

Wife is equal to her husband, sister to her brother, not better, not worse, they are equal.

In our country India, women are considered a responsibility of a male throughout her life, whether it be her father, brother, husband or son. Practices like "Kanyadan, Raksha Bandhan and the purdah system", where a women is veiled behind a Ghoonghat, highlight the extent of male dominance. Women is not a burden and marriage should not be the only reason for her existence.

I want to conclude that women are human beings as like as men. So don't tell us what to do, what to talk and what to wear. We only want gender equality.

KULSUM ZAHRA (XI-L)

MY NEW SCHOOL UNIFORM

I've got a new school uniform. I look very smart in this uniform. My mother irons my uniform late at night. The old uniform had a tie but the new uniform is tie free. My shoes have also changed. In class one I wore campus shoes but now I wear action shoes.

ANVI YADAV (II-A)

MY THANK YOU CARD

I made a Thank You card for my teacher. My parents helped me to make this card. This card is for my special teacher. She teaches me English. She is very caring and give attention to all students.

PRAKHAR (II-B)

NATIONAL FESTIVALS

I love national festivals. My uncle is in police service. He always brings a Tiranga costume for me on every national festival. I love to wear this costume and go for flag hoisting in the nearby Jalalpur police station. I'm very proud to be an Indian and enjoy national festivals.

PRIYA YADAV (II-C)

MY CERTIFICATE

I read in class 2C and my name is Aradhya,
I've many friends like Priya, Anchal and Kavya.
I hesitate talked to my ma'am,
But they all treat me like bread and jam.
One day my teacher gave a task,
I too raised my hand and dared to ask.
May I read in front of you?
For my teacher the voice was totally new.
After reading she gave me a huge as a certificate,
Thank you for opening for me a new bright gate.

ARADHYA SINGH (II-C)

THE CHRISTMAS PARTY IN MY SCHOOL

On 25 December, 2021 Christmas was Celebrated in my school. All the students wore red and white dresses. Many students also came in Santa dresses. We danced and enjoyed a lot. At last we got a treat of cotton candy and sweet biscuits. It was a fun day.

AKSHAYA (II-A)

ENGLISH VINGLISH

My favourite subject is English,
It feels like a sweet and salty dish.
"I am the music man" is my favourite poem,
I love to sing in school and home.
My teacher is a very funny girl,
We enjoy together like a beautiful pearl.
We're the aquarium and our teacher is the fish,
We all have fun with English Vinglish.

REET TRIPATHI (II-A)

AND THE STORY CONTINUES

It was a delightful night, it was the last day.
Everyone slept late night, because of the upcoming new way.
And the day came, with lots of hopes.
But who knows it's just a beginning, of ending lives on ropes.
Here's the text of Happy New Year, sharing old and new memory.
I was too planning for a better move, but a virus came to remain history.
We all took it so light and spent our normal lives.
But day by day the condition seems, a wounded body by knives.
January passed and February arrived, then March came with the final news.
All schools and business halt, by the orders of Government views.
Status and media were full of jokes, I too laughed at the situation.
We messed with nature and its taking revenge, by decreasing no. of population.
Some lost their jobs, some lost their families, some lost their courage and came to end.
But there are some people who are still alive, because of that true and loyal friend.
Police and Doctors served the world, they are unable to take precautions.
Some died in case of protecting us, salute to the great occupations.
People still behave as if blind man walking on the road.
It may give pleasures for a while, but will surely become a lifetime load.
Hundred born but thousand died, life is becoming a hell.
Some died by virus, some died by nature, while some jumped into a deep well.
Why is it happening? What is the reason?
None wants to talk about, everyone is busy in their season.
Thoughts trouble us every time, many contacts but still lonely inside.
Some share and express their feelings, whereas some don't reveal and hide.
We hurt each other indirectly, we cause them lots of pain.
But later on when person is gone, we cry in rain with no gain.
I still remember when I was sad and surrendered myself on the knee
But then my students crackle with joke, those flashbacks bring smiles to me.
I scold them in the class, I scold them in the corridor.
But now I can only wish to see them entering my class door.
So if you feel alone in your life, just surround yourself with children.
Because they'll never lie and never cheat and will fill your life with lots of fun.
We miss you our superstars, can't await please come back soon.
We want you students to be around us, your teachers are waiting under the moon.
I can't say much, I don't know when, everything is out of my control.
But always remember when you think to quit, God sent us to play an important role.
It's never ending process of life, it will always take our interviews.
Some may leave the world, some will stay strong And the Story Continues…….

HAPPY UPADHYAY (PGT-ENG.)

IN THE EYES OF STAKE HOLDERS...

My ward, Aarish Verma (8F) took admission in Radiant Central Children Academy in the year 2018 in class 5th. We selected the school as it is the best among the others schools in the near by area. I am impressed by the infrastructure of the school. The bus service is quite impressive and the classrooms are neat and clean. Teachers in this school are caring and have good teaching skill.

Mr. Ram Nihal Verma (Father)

The school provides proper learning environment to the students which is only possible with the help of efficient faculty. It not only emphasize on the subjective knowledge but also give due attention to extra curricular activities like Music, Dance, Sports etc. My ward, Saumya (8B) is learning and enjoying in the healthy environment.

Ms. Ranjana Yadav (Mother)

I have seen my daughter, Ayushi (8B), performing on stage with confidence and elegance. I am really greatful to the school and the faculty for grooming her. The school emphasize on holistic development of the students. Teachers encourage them to not only work hard in academics but also in other activities like Sports, Debate, Dance etc. I hope the school continue its efforts to impart knowledge to the students.

Ms. Kanchan Upadhyay (Mother)

My son Anmol Mishra study in class 8 B in this school. I have taken a right decision to choose Radiant Central Children Academy for my son's education.
All the teachers and non-teaching staff of this school are very dedicated to the school and to the children. Their support is really appreciative.
The principal of this school is accessible, caring and committed.
The method of teaching from 8th standard to 10th standard is perfect for students to prepare for future.
At this crucial time when the whole world is going through such a crisis Radiant College has left no stone untried to make sure students do not suffer even a bit.
The online classes during this pandemic is helpful for students.
I wish the students may grow as valued citizen of the country.

Mr. Raj Kumar Mishra (Father)

It is one of the best institute of district Ambedkar Nagar. I think school is doing very nice work. All the employees are sincere and devoted to the students. Tution fees should be reduced, keeping in mind the present situation. Children must be inspired by the teachers to do their homework.

Anany Singh (5C)
Krishna Kumar Singh (Father)

It is wonderful school. Discipline is maintained in the school. The teachers are experts in their subjects. Many activities organized in the school for the children who want to gain proficiency in their subjects.

Jitesh Sharma (5C)
Mrs.Gunja Sharma (Mother)

According to my view, this school is appropriate for my child . The teachers teaches very nicely and I am satisfied with their teaching methodology . Teachers are giving best efforts in online mode of teaching.

Sanchit Verma (5A)
Dr.Neharika Singh (Mother)

Kartikey Dubey (8F) is studying in the school since 2019. The school has wonderful teaching staff apart from infrastructure like Library, Computer Lab, Music Room, Yoga Hall and Playground etc.

Mr. Rakesh Kumar Dubey (Father)

Radiant Central Children Academy has many facilities like Computer lab, Library, Music room, Dance room. Teachers are caring in nature.

Zeeshan Ishrar (5B)
Salma khatoon (Mother)

विगत दो शैक्षणिक वर्षों में कोविड–19 जैसी महामारी का कठिन दौर चलता रहा है, जिसके कारण शिक्षण संस्थानों में पठन–पाठन कार्य अत्यंत प्रभावित हुआ है। इस अवधि में सरकारी दिशानिर्देशों के तहत बच्चों को इस महामारी से बचाने के लिए उनको विद्यालय में न बुलाकर ऑनलाइन पठन–पाठन करवाया गया। इस दिशा में रेडिएण्ट एकेडमी ने आनलाइन कक्षाओं में स्कूल जैसा वातावरण बनाकर पठन–पाठन को सुचारू रूप से संचालित किया। बच्चों की ऑनलाइन उपस्थित तथा गृह कार्य देने व कार्य का मूल्यांकन कर बच्चों व उनके अभिभावकों के संज्ञान में लाकर एकेडमी के शिक्षकों ने उच्च कोटि की कार्य कुशलता का परिचय दिया है। मेरा पुत्र प्रखर यादव कक्षा 4 बी में अध्ययनरत है जिसने विद्यालय द्वारा संचालित ऑनलाइन पठन–पाठन को आत्मसात किया और विभिन्न टेस्ट व परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन किया है। इस कार्य के लिए मैं स्कूल प्रशासन व शिक्षक वर्ग का आभार प्रकट करती हूँ।

श्रीमती प्रतिभा यादव (माता)

ANNUAL REPORT 2021-22

Introduction-

"Education is not the filling of a pail but the lighting of fire."

It is an enduring tradition to take time to pause, turn around to look at the fruitful year gone by and synergizing ourselves to move ahead to face the challenges in the coming years, with a positive attitude.

"Life and Time are the best teachers. Life teaches us use the time and time teaches us the value of life". Having lessons from horrible pandemic situation, we at Radiant Academy worked our level best to transform class rooms to homes of students in online mode to minimize learning loss without compromising quality of education.

To hone skills and engage students effectively, both scholastic and co-scholastic activities were taken care in online/offline mode following covid appropriate behaviour. Content enrichment, testing and assessment were integral part of school activities. To promote creativity and develop aesthetic sense, online classes of Art & Music were also in place. Term 1 exams were conducted as per directives from CBSE.

To take care of Physical health of students, Physical Education faculty worked tirelessly, recorded and shared videos on physical activities/exercises as deem fit for students to perform at their homes in order to keep themselves physically fit. Motivational talks was regular feature to boost students mental & emotional well being.

Celebrations of National Festivals were given due respect and celebrated with enthusiasm and fervour.

"Excellence in academics is the hallmark of any good institution".

It's the teacher that makes the change, not the mere classroom".

We believe in equipping teachers to prepare the students for the future and to update their knowledge.

To empower the teachers, In House Training Programs were organised regularly in addition to online training programs conducted by CBSE. To showcase students achievements in different genre, Quarterly News Letters were published regularly.

When all the sporting activities were almost at halt , students of Radiant Academy could bring laurel to school winning medals in Judo at national level. Additionally, many students got selected for JEE and NEET in their very first attempt.

To meet its commitment to provide good quality ambiance, the school management got new Geography Lab installed & Bio lab expanded.

We express our heartfelt gratitude to all our students, parents, well wishers and patrons of our school whose constant support and guidance helped us maintain high standard of education and discipline in our school. We take this opportunity to commit ourselves to do our best to serve the society through quality education.

"Learning gives creativity, creativity leads to thinking, thinking provides knowledge and knowledge makes you great." With these words I conclude.

Akhilesh Shukla
Principal

ये मंजिल नहीं सफर है मेरा

हिमालय की बर्फीली चोटियों को निहारते हुए उर्दू शायर फिरदौस ने लिखा था – **'धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, सिर्फ यहीं है।'** वास्तव में इसका अहसास मुझे जीवन में आज पहली बार हो रहा है। अब तक तो मैं किताबों में या टेलीविजन में वहाँ के सौन्दर्य के बारे में पढ़ता–देखता आया था, लेकिन आज प्रकृति का यह विलक्षण और मनोरम रूप देखकर मैं अभिभूत हूँ। मैं बात करने जा रहा हूँ कश्मीर और अमृतसर की यात्रा के अनुभव की। हम अपने परिवार के सदस्यों माता–पिता, दो बड़ी बहनों व छोटे भाई के साथ 30 अक्टूबर की रात 9 बजे टेढ़े–मेढ़े पहाड़ी रास्तों का सफर करते हुए जम्मू पहुँचे। यहाँ से बस द्वारा कटरा रवाना हुए। वहाँ पहुँचते ही हमारा कौतुक मन उस स्थान की प्रत्येक वस्तु को देखकर रोमांचित हो रहा था। हम खुश थे कि हम अपने गंतव्य स्थल आ चुके थे। अनेक जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों वाले लोगों का संगम बना यह शहर बर्फीली वादियों, हरियाली, धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों के लिए दुनिया भर में विख्यात है।

चूँकि हमारी यात्रा का मुख्य उद्देश्य माता वैष्णो देवी के दर्शन प्राप्त करना था। अतः हम सभी सर्वप्रथम बाबा काल भैरव के दर्शन करते हुए माँ वैष्णो देवी के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु रवाना हुए। यहाँ तक पहुँचने के लिए हमें 12 किमी0 की मुश्किल चढ़ाई पार करनी पड़ी। यहाँ पहुँचते ही हमें जिस दिव्यता और पवित्रता का अहसास हो रहा था, उसे हम अभिव्यक्त नहीं कर सकते। यह शक्ति को समर्पित पवित्रतम् हिन्दू मंदिरों में से एक है। यह त्रिकुटा पर्वत पर स्थित है। प्रतिदिन यहाँ लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यहाँ से अब हम विश्व भर में अपने नयनाभिराम सौन्दर्य के कारण प्रसिद्ध डल झील देखने निकल पड़े। इस अण्डाकार झील को हम बस अपलक देखते ही जा रहे थे। इसका पानी एकदम साफ था चारों ओर कुछ धुंध के साथ हवा तेज चल रही थी। इसके चारों तरफ ऊँचे खड़े देवदार के वृक्ष जल में प्रतिबिम्बित हो रहे थे। चारों तरफ हाउस बोट तैर रहीं थीं। हम यहाँ हाउस बोट में विहार करने के बाद इस झील के पास एक छोटे से शिव मन्दिर भी गए। यहाँ से हम सभी अशोक के काल के बने शंकराचार्य मन्दिर गए, जिसे हाल ही में भारत सरकार द्वारा भव्य रूप प्रदान किया गया है। इसके आगे हम शहीद स्मारक, चामुंडा मन्दिर, तपोवन धाम होते हुए ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्व की डोगरा आर्ट गैलरी देखने गए। अब तक सघन अँधेरा हो चुका था। इसलिए हम रात्रि विश्राम हेतु अपने ठहरने के स्थान पर आ गए।

अगले दिन यहाँ से 240 किमी. दूर अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर देखने का सपना हम साकार करना चाहते थे। सुबह के करीब दस बजे हम सभी अमृतसर के लिए रवाना हो चुके थे। रास्ते के अद्भुत नजारे हम अपने कैमरे में कैद करते चल रहे थे। आखिरकार सात घण्टे के सफर ने हमें अमृतसर पहुँचा ही दिया। यहाँ भोजन व आराम के पश्चात् हम अगली सुबह सिख गुरुद्वारा के पाँचवे गुरु अर्जुन देव द्वारा स्थापित स्वर्ण मन्दिर की ओर चल पड़े। दूर से ही हमें चार विशाल द्वार दिखे। हमें बताया गया कि चारों द्वार इस बात के प्रतीक हैं कि सिख धर्म के दरवाजे सभी धर्म के लोगों के लिए हमेशा से खुले हैं। गुरुद्वारे की संरचना अद्वितीय थी। संगमरमर तथा सोने से निर्मित यह गुरुद्वारा दुनिया भर के सिखों की आस्था का महान केन्द्र है। यहाँ के लंगर में प्रतिदिन हजारों लोग प्रसाद रूप में भोजन ग्रहण करते हैं। इस गुरुद्वारे का अपना एक लम्बा इतिहास रहा है। पवित्र जल तालाब के बीचों–बीच यह स्थित है। मन्दिर के चारों तरफ विशाल प्रांगण है। गुरुद्वारे के अन्दर एक म्यूजियम भी है। जहाँ हमने सिख धर्म से जुड़ी दुलर्भ वस्तुएँ, तस्वीरें, धार्मिक पुस्तकें, तलवारें आदि देखीं। हम सबने यहाँ भजन कीर्तन में हिस्सा लिया तथा लंगर के प्रसाद को ग्रहण करके बड़े इत्मीनान से भ्रमण करते हुए वापस आ गये।

हमारी यात्रा का यह अंतिम पड़ाव था। हम सोच रहे थे कि हमलोग कितनी अद्भुत दुनिया में रहते हैं, जो अद्वितीय सुन्दरता, आकर्षण और रोमांच से भरी है। हमें बस दुनिया को खुली आखों से निहारने की जरूरत है। **सन्त आगस्ताइन** ने शायद इसी कारण लिखा होगा – **''दुनिया एक किताब है और जो यात्रा नहीं करते, वे केवल एक ही पृष्ठ पढ़ पाते हैं।''**

शिवांश दीक्षित (XI-D)

साहित्य का जीवन से अभिन्न संबंध

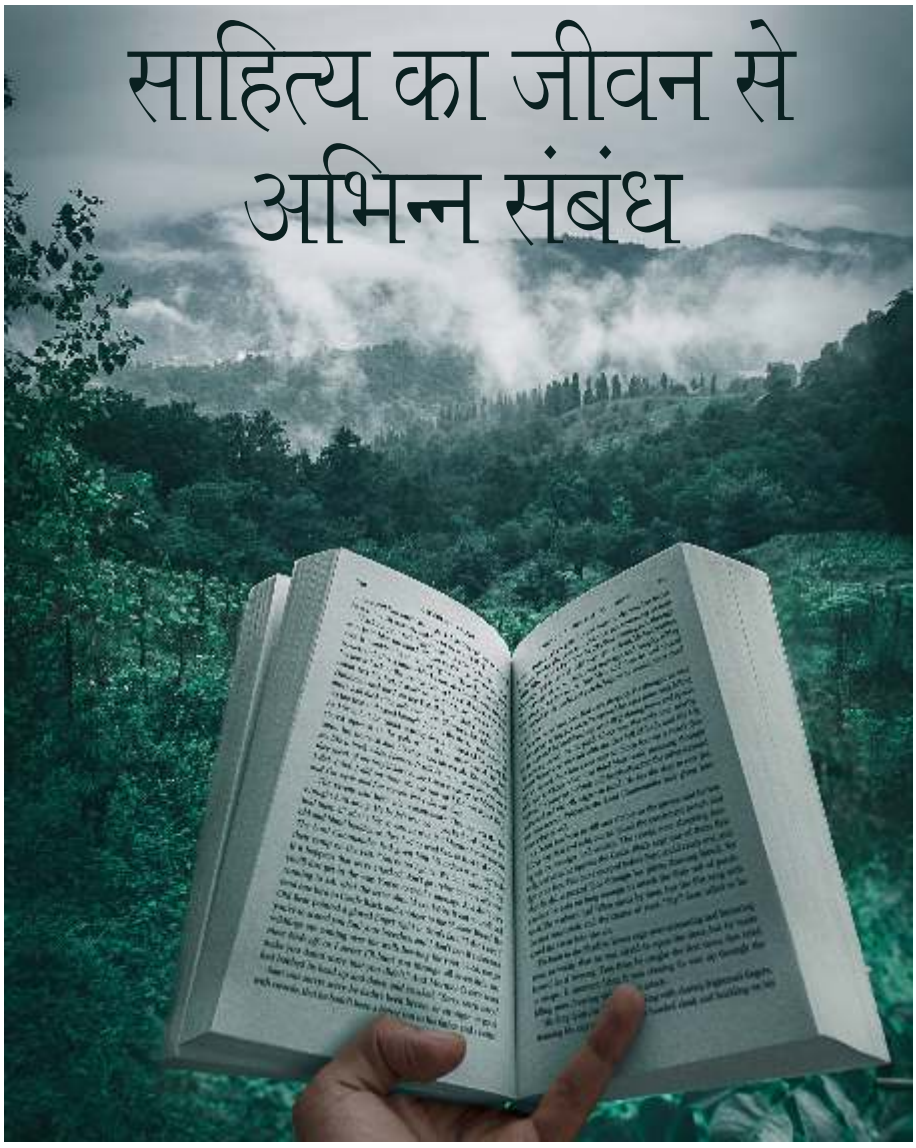

जीवन साहित्य का आधार है, चाहे वह व्यक्ति विशेष का जीवन हो, परिवार का हो, राज्य का हो अथवा सम्पूर्ण विश्व का जीवन हो। जीवन को विकासपरक बनाने के लिए साहित्य का समृद्ध होना जरूरी है। किसी भी राष्ट्र की समृद्धि उसकी सभ्यता एवं संस्कृति में ही निहित होती है और साहित्य सभ्यता एवं संस्कृति का वाहक होता है। यदि साहित्य न होता तो आज से लगभग चार हजार वर्ष पूर्व सिन्धु सभ्यता और दुनिया के अन्य देशों के ह्रास और विकास के क्रम को कभी न जान पाते। यदि साहित्य की समृद्धि परम्परा न होती तो भारतीयों में देशभक्ति की भावना जाग्रत् नहीं हो पाती। कल्पना करिए, अगर पूरे वर्ष साहित्य के कोई कार्य न हों, कोई कविता न लिखी जाए, कोई गीत न गाए जाएँ, कोई चित्र न उकेरे जाएँ, कोई मूर्ति न गढ़ी जाए तो मानव जीवन कितना नीरस हो जाएगा। क्या हम बिना साहित्य के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में इस नीरसता और आदर्शहीनता के साथ आगे बढ़ सकेंगे? साहित्य ही मानव जीवन को सरस बनाता है, उसमें नैतिकता और आदर्श स्थापित करता है, साहित्य हमें अन्याय और शोषण से लड़ने की ताकत देता है। रूसो, माण्टेस्क्यू, वालटेयर, रॉबर्ट फ्रोस्ट, लोहिया, गाँधी, टैगोर जैसे असंख्य विचारकों ने अपने विचारों की बदौलत ही देश–दुनिया को नई दिशा दी। आज भी हम उनको बड़े आदर के साथ पढ़ते हैं। पुस्तकों के बारे में कहा जाता है कि **''जिस पुस्तक से मनुष्य का अज्ञान, कुसंस्कार और अविवेक दूर नहीं होता, अत्याचार के विरुद्ध सर उठाके खड़ा नहीं होता, स्वार्थ–हिंसा के दलदल से उबर नहीं पाता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार नहीं करता, वह पुस्तक किसी काम की नहीं।''**

भारतीय संस्कृति में साहित्य का जीवन से अभिन्न संबंध है। मनुष्य के जन्म के साथ ही काव्य का जो सिलसिला सोहर से शुरू होता है; फिर वह लोरियों, गजलों, गीतों, भजन, कीर्तन से गुजरता हुआ निर्गुण पर समाप्त होता है। साहित्य सामाजिक संबंधों एवं उत्तरदायित्यों में प्रगाढ़ता लाता है; मानव शरीर भी एक यंत्र के समान है जो मन–मस्तिष्क से संचालित होता। मन के संयोग से ही प्रत्येक ज्ञानेन्द्रिय विषय को ग्रहण करती है और उससे शरीर में रासायनिक पदार्थ का निर्माण होता है। यही रासायनिक पदार्थ उत्तेजना उत्पन्न कर अनेक भावों का सृजन करते हैं, जो कि साहित्य साधना का आधार बनते हैं। इस साहित्य में कभी हास्य व्यंग्य होता है, तो कभी लोक मंगल की भावना भी निहित होती है। क्योंकि कुछ लोग हास्यप्रिय होते हैं और कुछ धीर–गंभीर प्रकृति के लोग भी होते हैं।

साहित्य हमेशा अपने समय की प्रवृत्तियों का प्रतिबिम्ब होता है। वर्तमान में देखें तो आजकल साहित्य में काम और अर्थ की प्रधानता देखी जा रही है। जरूरी है कि इसमें चारों पुरूषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का समन्वय स्थापित हो। परम्परागत भारतीय मान्यता है कि प्रत्येक बुरे विचार का परिणाम बुरा ही होता है, इसलिए बुरे विचार न पनपें हमें सदैव अच्छा साहित्य पढ़ना चाहिए। एक अच्छा साहित्य ही हमारी चेतना को सदैव ऊपर देखने की प्रेरणा देता है। यद्पि आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। ऐसे में हम विज्ञान की उपेक्षा कदापि नहीं कर सकते हैं। पर जरूरी है कि हम विज्ञान के साथ–साथ शौक के तौर पर अपने साहित्य और दर्शन को भी समझें; तथ्यात्मक ज्ञान के साथ–साथ कल्पना की कुलाँचें भी भरें; तकनीक के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों को भी स्थापित करें।

डी. पी. तिवारी (PGT Hindi)

ऑनलाइन गेम्स की लत

आधुनिक लाइफ स्टाइल की सबसे बड़ी समस्या ऑनलाइन गेम्स की लत है। इस महामारी काल में यह वैश्विक समस्या बन चुकी है। वैसे तो कुछ देर तक गेम खेलने में कुछ बुराई नहीं है, लेकिन जब ये आदत बन जाए, तो ये बीमारी बन जाती है। यह उतनी ही खराब है जितनी नशे की लत। बच्चे इसके खतरों को ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं। इस लत के शिकार बच्चों को हमेशा ये इंतजार रहता है कि कब माता–पिता घर जाएं और वे बेरोकटोक गेम खेलना शुरू करें। ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान औसतन तीन से चार घण्टे तक बच्चे गेम खेलते पाये गये। कई बार तो बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान ही गेम्स खेलने लगते हैं। घर बैठे उन पर स्वाध्याय करने या गृह कार्य करने का ज्यादा दबाव नहीं रहता। गेम्स के कई अलग–अलग स्तर होते हैं, बच्चे उन अगले स्तरों तक पहुँचने के लिए बेताब रहते हैं।

भारत में इस समय लगभग 4,44,226 गेमिंग ऐप्स हैं। इनमें से 19,632 गेम्स सिर्फ भारत में ही विकसित किये गये हैं। वर्ष 2020 में 7 करोड़ से भी ज्यादा ऑनलाइन गेम्स भारत में इंस्टाल किये गए। वर्ष 2019 में ऑनलाइन गेम्स इण्डस्ट्रीज की वैल्यू 8300 करोड़ थी। जो कि वर्ष 2022 में बढ़कर 21000 करोड़ हो चुकी है।

ऑनलाइन गेम्स के चलते बच्चे पर्याप्त नींद नहीं ले रहे हैं। मोबाइल से दूर रहने की बात करने पर चिढ़ते हैं। व्यक्तिगत स्वच्छता तथा अपने जीवन की उपेक्षा करते हैं। समाज के अन्य लोगों से बात नहीं करते। बात–बात पर गुस्सा प्रकाट करते हैं। माता–पिता परेशान हैं कि बच्चा अचानक इतना गुस्सा क्यों प्रकट करता है। इसके अलावा बड़ों को आदर करना भूल रहे हैं। स्कूल की ग्रेड्स और प्रदर्शन में गिरावट आ रही है। कुछ बच्चे स्कूल से लगातार अनुपस्थित हो रहे हैं। स्कूल की सांस्कृतिक गतिविधियों में हिस्सा लेने से बचते हैं। गेम न खेलते हुए भी गेम के ही बारे में बातें करते हैं। कुछ बच्चे तो माता–पिता के डेबिट–क्रेडिट कार्ड से पैसा भी चुराने लगे हैं। ज्यादातर बच्चे हिंसक गेम खेलते हैं। अतः उनमें अपराध की प्रवृत्ति बनने की संभावना बढ़ सकती है। ऐसे में क्या किया जाये आज के अभिभावकों के लिए एक बहुत बड़ी समस्या है। ऐसे में हम बच्चों को घर के बाहर खेलने के लिए न केवल प्रोत्साहित करें, बल्कि उनके साथ खेलें भी। **उन्हें कुछ दैनिक कार्य करने की जिम्मेदारी देनी चाहिए। जैसे पौधों को पानी देना, मनपसंद डिश तैयार करना; सप्ताह में कम से कम उन्हें एक दिन ऑनलाइन गेम न खेलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।** अगर गेम बच्चें के उम्र के लिए सही नहीं है तो उसे गेम न खेलने दें। माता–पिता को सावधान हो जाना चाहिए, जब बच्चा उनसे अचानक कुछ छुपाने लगे या अचानक डिवाइस की स्क्रीन बदल दे, तो हमें समझ जाना चाहिए कि बच्चा ऐसा कुछ कर रहा है जो उसे नहीं करना चाहिए, बच्चों को यह सिखाने की जरूरत है वे किसी अज्ञात स्रोत से गेम डाउनलोड न करें, पॉपअप या इमेजेस पर क्लिक न करें। इनमें वायरस हो सकता है। गेम खेलते हुए व्यक्तिगत विवरण देने से बचें। क्योंकि अपराधी इसका गलत इस्तेमाल करते हैं। बच्चों को यह भी बताने की जरूरत है कि गेम खेलते हुए अपने वास्तविक नाम इस्तेमाल न करते हुए स्क्रीन नेम का इस्तेमाल करें। खेलते हुए कोई तंग करे तो तुरन्त प्रतिक्रिया न देकर पुलिस को सूचित करें। यदि गेम खेलते हुए लगे कि कहीं कुछ गलत हो रहा है तो तुरन्त इसका स्क्रीनशाट लेकर रखें। यदि बच्चे के फोन में अचानक बहुत सारे फोन नंबर और ईमेल दिखाई दें, तो सावधान होने की जरूरत है। सबसे महत्त्वपूर्ण सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह ऐसे हिंसक खेलों पर तत्काल प्रतिबंध लगाये तथा ऑनलाइन गेम्स कम्पनियों के लिए ये मानक निर्धारित करे कि सप्ताह में कुछ निश्चित दिनों व घण्टों के लिए ही बच्चे गेम्स खेलें। इससे बच्चों के लिए बाध्यता रहेगी कि वे निर्धारित समय में ही सीमित गेम्स खेल सकते हैं।

रमन प्रजापति (XII-D)

हम धर्मनिरपेक्ष हैं या पंथनिरपेक्ष

धर्मनिरपेक्ष और पंथनिरपेक्ष शब्द 'सेकुलरिज्म' के अनुवाद माने गए हैं। यह विचार सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में पनपा। वहाँ मध्य काल में धर्म अत्यंत ताकतवर व नकारात्मक रूप में था। जिसके कारण उस युग को अंधकार युग कहा जाता है। 14वीं सदी में पुनर्जागरण की शुरूआत धर्म सुधार व वैज्ञानिक क्रांति के कारण यूरोप के लोगों को समझ में आया कि उनके पिछड़ेपन का मूल कारण धर्म का जरूरत से ज्यादा हावी होना है। धीरे–धीरे आगे लोगों में धर्म से मुक्ति का भाव बढ़ता गया। इस दौरान धार्मिक कट्टरपंथियों ने गैलीलियो को प्रताड़ित किया। न्यूटन और डार्विन पर असहनीय दबाव बनाया। किंतु धर्म और वैज्ञानिकता के बीच संघर्ष में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बल मिलता गया। 19वीं सदी में इंग्लैण्ड में जॉन ऑस्टिन जैसा विचारक आता है, जो राज्य की सर्वोच्च शक्ति के सामने धर्म को रत्ती पर भी महत्व नहीं देता। कार्लमार्क्स धर्म को अफीम और शोषण का यंत्र बता रहा था। ठीक इसी समय 'जे.एस.मिल' अपने उदारवाद के माध्यम से, तो 'चार्ल्स डार्विन' अपने विकासवाद के माध्यम से धर्म की सत्ता को चुनौती दे रहे थे। उन्हें आम जनमानस का भी भरपूर साथ मिल रहा था। इसी पृष्ठभूमि में 1851 में होलिओक व चार्ल्स ब्रैडलॉफ द्वारा सेकुलरिज्म को एक सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया गया। इनके अनुसार व्यक्ति धर्म के प्रति उपेक्षा बरते या विरोध करे। वह न तो उसके प्रभाव में रहे और न ही उनके विरोध में अपनी ऊर्जा खर्च करे। वह इस बात को समझे कि व्यक्ति की नियति ईश्वर नहीं स्वयं वह तय करता है। सेकुलरिज्म का दूसरा विश्वास था कि व्यक्ति इसी लोक के बारे में चिंता करे। तीसरा विश्वास यह था कि नैतिक सिद्धान्तों को धर्म से न जोड़ा जाए।

सेकुलरिज्म के समर्थकों का अंतिम विश्वास था कि मनुष्य की विकास यात्रा विज्ञान के हाथो ही सफल हो सकती है। ये विचारक वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे रात–दिन अनुसंधान करके प्रकृति के रहस्यों को सुलझाएँ और ऐसे रास्ते खोजें जिनकी मदद से मनुष्य का जीवन बेहतर हो सके। सेकुलरिज्म का यही विचार अंग्रेजों के माध्यम से भारत पहुँचा। चूँकि हमारे समाज की स्थितियाँ और जरूरते अलग थी, इसलिए मूल रूप से यहाँ चल नहीं पाया। किन्तु धीरे–धीरे कुछ लोगों की स्वीकार्यता व अस्वीकार्यता के बीच यह फैलता गया। देश जब आजाद हुआ संविधान बना तो देश को सेकुलर देश घोषित किया गया। यहाँ सेकुलरिज्म का प्रायः वही नजरिया है जिसे महात्मा गाँधी 'सर्वधर्म शेषता है समभाव' कह गए हैं। हमारे संविधान में पंथनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका भाव है कि व्यक्ति को विभिन्न पंथों या संप्रदायों से निरपेक्ष रहना चाहिए तथा सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए। उसे धर्म पथ से विमुख नहीं होना है, सिर्फ इतना करना है कि वह किसी पंथ विशेष का विरोध न करें। इसी कारण प्रायः हमारे नागरिक, नेतागण आदि विभिन्न धर्मों के त्योहारों पर धार्मिक समुदायों को बधाई देते हैं। धार्मिक संस्थानों में आते–जाते हैं। राजकीय अवकाश होते हैं तथा विभिन्न त्योहारों को सद्भाव के साथ मिलजुल कर मनाते हैं। किन्तु कभी–कभी चुनावी राजनीति के कारण इस सद्भाव को चुनौती मिल जाती है। अंग्रेज भी ऐसी ही विभाजन कार्यनीति को अपनाते थे। किन्तु सत्य यह भी है कि हजारों वर्षों के इतिहास में बहुत कम साम्प्रदायिक तनाव की घटनाएँ घटी हैं। जिसका अनुपात अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है। चूँकि भारत के सामान्य नागरिक का स्वभाव धार्मिक है, उसे बाकी धर्मों के प्रति कोई दुराग्रह नहीं है। हजारों वर्षों की हमारी मिली–जुली संस्कृति रही है। इसी कारण पंथनिरपेक्षता या सर्वधर्म समभाव हमारे समाज की बुनियादी विशेषता है, जो सदियों से अक्षुण्ण है और रहेगी।

योगिता (XI-E)

आज के संदर्भ में जैन धर्म

महावीर का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है– 'स्यादवाद का सिद्धान्त।' इसका सीधा सा अर्थ यह है कि हमारा ज्ञान सीमित और सापेक्ष होता है तथा ईमानदारी से हमें यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए। **हमें ऐसे दावे करने से बचना चाहिए कि हमारा ज्ञान असीमित और अप्रश्नेय है।** स्याद्वाद 'स्यात' शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है संभवतः या हो सकता है। किंतु महावीर ने इस शब्द का प्रयोग जिस अर्थ में किया है – वह है सापेक्षता। इसका अर्थ है हमारे पास जो कुछ ज्ञान है, वह निरपेक्ष न होकर सापेक्ष है। सापेक्ष का सरलतम अर्थ है– वह जो किसी से प्रभावित नहीं हैं। यदि हम ऐसे ज्ञान का दावा करते हैं जिसकी हर स्थिति में सही होने की गारंटी है, तो हमारा दावा निरपेक्ष ज्ञान का है और अगर हम यह मान लेते हैं कि हमारा ज्ञान विशेष परिस्थितियों के अनुसार ही सत्य है और स्थितियाँ बदलने पर गलत साबित हो सकती हैं, तो हम ज्ञान की सापेक्षता को स्वीकार करते हैं। महावीर का कहना है कि व्यक्ति को अपने की सीमाओं को पहचानना चाहिए और पूरी ईमानदारी से अपने कथनों में उसे स्वीकार करना चाहिए।

महावीर स्वामी का दूसरा विचार 'अनेकांतवाद' कहलाता है। 'अनेकांतवाद' का सरलतम अर्थ है कि दुनिया में अनेक वस्तुएँ हैं और प्रत्येक वस्तु की अपनी विशेषताएँ हैं। अगर हम चाहते हैं कि हम किसी एक वस्तु को पूरी तरह समझ लें तो हमें उसके साथ–साथ शेष सभी वस्तुओं को भी समझना होगा, क्योंकि हर चीज हर दूसरी चीज के साथ किसी न किसी स्तर पर संबंधित है। इसलिए जैन दर्शन में कहा गया है कि जो किसी एक वस्तु को संपूर्णता में जान लेता है वह समस्त ब्रह्माण्ड को जान लेता है। सामान्य व्यक्ति के लिए यह असंभव माना गया है। वर्तमान विश्व में उसी विचार को हम दूसरे नामों से जानते हैं। उनमें से एक का नाम है 'परिस्थितिकी दर्शन' या 'इकोलॉजिकल फिलॉसफी' जिसकी शुरूआत 1970 के दशक में नार्वे के एक विचारक 'आर्ने नेस' की थी। नेस ने बताया था कि विश्व की अधिकांश नैतिक समस्याओं के मूल में एक विशेष दर्शनिक समस्या छिपी है, जिसे सुलझाए बिना मनुष्य के नैतिक दृष्टिकोण को ठीक बनाना संभव नहीं है। ये दार्शनिक समस्या है, यह मान चलना कि जगत में भिन्न–भिन्न वस्तुएँ हैं, जिनमें आपस में कोई भीतरी संबंध नहीं है। **हम प्रायः पदार्थों में अन्तर ढूँढ़ते हैं, एक दूसरे से सह–सम्बंध नहीं स्थापित करते। इसी कारण मनुष्य स्वयं को प्रकृति का मालिक समझता है।**

महावीर ने अपने अनुयायियों को पंचव्रत का पालन करने की भी शिक्षा दी, जिसमें शामिल हैं– अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य, अस्तेय और ब्रह्मचर्य। इन सिद्धान्तों के आधार पर महावीर का विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि वे समाजवाद और पूँजीवाद दोनों विशेषताओं का समाहरण करते हैं। उदाहरण के लिए अपरिग्रह का मूल्य सीधे–सीधे समाजवाद के इस विचार से जोड़ता है कि समाज में आर्थिक संसाधनों का वितरण समता मूलक तरीके से होना चाहिए। अपरिग्रह का सरल अर्थ है एकत्रित न करना। अस्तेय का विचार है कि हमें दूसरों की संपदा नहीं चुरानी चाहिए। ये विश्वास की मेरी संपदा कोई नहीं चुरा पाएगा, उद्यमशीलता के पूँजीवादी मूल को प्रोत्साहित करता है। अगर यह विचार सही तरीके से स्थापित हो जाए तो कोई उद्यमी अपने कर्मचारियों का हक नहीं मारेगा। कोई अमीर किसी गरीब को नुकसान नहीं पहुँचाएगा और अर्थव्यवस्था में तनाव की जगह सद्भाव को प्राथमिक स्थान मिलेगा।

महावीर का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत अहिंसा है। उन्होंने सभी जीवों को समान आत्मा माना और सभी जीव–जन्तुओं की रक्षा करने की हिदायत दी, आज हम देखें तो तमाम कारणों से जीव–जन्तुओं की अनावश्यक हत्याएँ होती हैं और हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। महावीर जी मानवता के हित मात्र में सद्गुणों के विकास पर अत्यधिक बल देते हैं, जिस पर हम सभी को अमल करने की जरूरत है।

शालिनी (XI-E)

अजेय योद्धा
जनरल बिपिन रावत

बहादुरी ओढ़ी नहीं जाती। यह वह गुण है जो रक्त में मिलता है। सदियाँ बीत जायेंगी अपनों से अपने पन की हदें पार करने और दुश्मन को उसके घर में घुसकर मारने वाले जनरल विपिन रावत की चर्चा करते हुए वे हमेशा सभी से मुस्कुराते हुए मिलते थे और अक्सर लोगों को मजेदार किस्से सुनाते थे। लेकिन वह विजयी मुस्कान वाला योद्धा भारत का प्रथम सीडीएस 08 दिसम्बर, 2021 को पत्नी मधुलिका रावत व 11 अन्य सैन्य अफसरों के साथ एक दूर्भाग्य पूर्ण हेलिकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त हुए। उनका पूरा परिवार सैन्य पृष्ठभूमि व परम्पराओं वाला रहा है। राष्ट्रीय रक्षा अकादमी खड़ग वासला और भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून के प्रशिक्षु रहे विपिन रावत को अव्वल आने पर स्वार्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया था। इसके बाद 1978 में उन्हें गोरखा राइफल्स की उसी बटालियन में तैनाती मिली, जिसमें उनके पिता भी सेवाएँ दे चुके थे। आपके द्वारा यहाँ 10 साल तक आतंक विरोधी अभियान चलाया गया। उनके अभियानों के कारण ही आतंकवादी कभी भी कश्मीर में ज्यादा दिन गतिविधियाँ नहीं चला पाये। नियंत्रण रेखा से सटे उरी सेक्टर में मेजर जनरल के रूप में कम्पनी का नेतृत्व किया। 17 दिसम्बर, 2016 को भारत सरकार द्वारा 27वें सेनाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। उसके बाद 30 दिसम्बर, 2019 को सीडीएस के रूप में नियुक्त हुए। इस पद पर रहते हुए उन्होंने तीनों सेनाओं के बीच गहरा सामंजस्य स्थापित किया। उन्हें चीन के विश्वासघाती चालों की गहरी पहचान थी। पाकिस्तान को वह चिन्ता के कारण नहीं मानते थे। 'जब तय कर लेंगे निपटा देंगे' ऐसा वह हँसकर कहते थे। उनके नेतृत्व में भारत में पाक और चीन दोनों मोर्चों पर एक साथ निपटने की रणनीति तैयार की। उन्होंने सैन्य बलों को हाइब्रिड युद्ध, साइबर युद्ध और अंतरिक्ष युद्ध जैसी चुनौतियों के लिए तैयार किया ।

देहरादून में युद्ध स्मारक के लिए उन्होंने अपनी जमीन दी। इस युद्ध स्मारक निर्माण में हर बाधा को दूर किया। उन्होंने मिग 21 का फ्रेम दिलवाया, स्वयं कारगिल विजय के ताम्रचित्र दिलवाया, नौसेना का मॉडल दिया। वह इस 'युद्ध स्मारक के पिता' कहे जाते हैं। भारतीय युवाओं को सैन्य धर्म पालन की प्रेरणा देने वाले भारत माता की इस अमर सपूत को याद करते हुए हम सभी उनके चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

आदर्श यादव (IX-A)

कृतज्ञता

अगर आपको किसी ऐसी वस्तु का नाम बताना हो, जो किसी के पास होने पर उसे और प्राप्त होता है। तो क्या आप बता पाऐंगे? उस वस्तु का नाम है कृतज्ञता। कृतज्ञता एक भावना है। इसका अर्थ है अपने प्रति की हुई श्रेष्ठ और उत्कृष्ट सहायता के लिए श्रद्धावान होकर दूसरे व्यक्ति के समक्ष सम्मान प्रकट करना। यह किसी के लिए भी हो सकती है– ईश्वर, समाज, प्रकृति, व्यक्ति, जानवर आदि। कृतज्ञता एक दिव्य प्रकाश है। यह जहाँ भी होती है वहाँ कभी खुशियों की कमी नहीं होती। इसी गुण के बल पर इंसान में एक सहज संबंध विकसित हो सकता है। भावना और संवेदना का जीवंत वातावरण निर्मित हो सकता है।

जब हमारे अंदर कृतज्ञता की भावना उत्पन्न होती है, तब हमारे विचार भी सकारात्मक होते हैं और जब हम सकारात्मक रहते हैं तो हम मानसिक व शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहते हैं। हम मनुष्यों की यह आदत होती है कि हम सदैव उन चीजों के लिए परेशान रहते हैं जो हमारे पास नहीं है परन्तु जो कुछ भी हमारे पास है जिनकी वजह से है उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना भूल जाते हैं। हमें समझना चाहिए कि हमारा जीवन ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। जीवन के कारण ही हमारे लिए इस दुनिया के सुख हैं। इसलिए हमें सबसे पहले ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। इससे हमारा जीवन कई गुना ज्यादा खुशहाल बन सकता है। हमें हर सुबह उठकर सबसे पहले ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए।

हमारे जीवन में कृतज्ञ होने के कारणों की कमी नहीं है। हम अपने स्वस्थ शरीर व मस्तिष्क के लिए धन्यवाद कर सकते हैं। रोज के भोजन के लिए किसान को धन्यवाद कर सकते हैं। हम अपने घरों में चैन से सो सकते हैं उसके लिए सैनिकों का धन्यवाद कर सकते हैं। इस प्रकार हम अपने जीवन में उन सभी को धन्यवाद कर सकते हैं, जो हमारे जीवन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायक हैं। हम जितना ही कृतज्ञ रहेंगे, हमें उतना ही और मिलेगा। कृतज्ञता ही सफलता और खुशियों का राज है।

तनुजा द्विवेदी (XI-B)

गाँधी जी समझाओ न

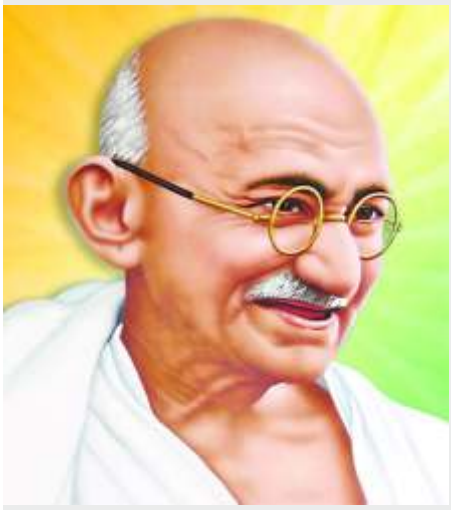

काश! बापू आज आप जिन्दा होते तो शायद आपकी मदद से हम इस दुनिया को सुधार सकते। पता है आज अगर आप होते तो आपको भी अच्छा नही लगता। क्योंकि दुनिया बहुत बेढ़ंगी हो गई है। हर समय इसे पैसों की पड़ी रहती है। अगर आज आप होते तो आपकी मदद से हम इस दुनिया को यह बताते कि हर किसी से दोस्ती करनी चाहिए और हर रोज जो सैनिक मारे जाते है उनका भी एक परिवार है, उनके भी छोटे–छोटे बच्चे हैं जिनके साथ वक्त गुजारना उस देश के सैनिक को भी बहुत अच्छा लगता है। जिसे देखो वो खुद को बड़ा बनाने में लगा रहता है। वो यह नहीं समझता कि वो खुद को बड़ा इंसान साबित करने में दूसरों को कष्ट दे रहा है। हमें इस दुनिया से दुश्मनों को नही दुश्मनी को हटाना है और सब पर दोस्ती का प्यार बरसाना है। तब हमारी दुनिया एक सच्ची दुनिया बन पाएगी। इस दुनिया को कौन समझाए? बापू! आप होते तो समझा पाते कि सभी के साथ प्यार से रहने में ही सबकी भलाई है। दूसरों के दुखों पर मरहम लगाने में ही जीवन का सच्चा आनन्द है। संकट के समय एक दूसरे की मदद करना ही हम सभी जनों का धर्म है। धर्म संप्रदाय के नाम पर इतना जो लोग नफरत फैलाते हैं आप होते तो दुनिया को समझा पाते!

आयूषी उपाध्याय (VIII-B)

पहली बार जब मैंने...

आज भी अच्छी तरह से याद है मुझे तब मैं केवल आठ साल की थी, जब मुझे पहली बार चाय बनाने का अवसर मिला था। मैं बहुत खुश थी। चाय की सामग्री व बनाने की विधि मैंने अपनी दादी से सीखी थी। मैंने जब पहली बार चाय बनाई तो घर के सभी सदस्यों ने बहुत सराहना की। किन्तु जब मैंने स्वयं चाय पी तो लगा कि यह पीने योग्य नहीं थी। क्योंकि मम्मी व दादी की बनाई गई चाय का रंग व स्वाद कुछ और रहता था। मैंने महसूस किया कि चायपत्ती ज्याद होने के कारण तथा देर तक उबालने के कारण चाय कड़वी हो गई है। चीनी की मात्रा भी बहुत कम थी। इस कारण मैंने कई दिनों तक दोबारा चाय नहीं बनाई, सिर्फ मम्मी को चाय बनाते हुए देखती रही। एक दिन मैंने मम्मी से चाय बनाने की इच्छा जाहिर की। मुझे उम्मीद थी कि अबकी बार चाय जरूर अच्छी बनेगी। मैंने मम्मी के सहयोग से शक्कर, चाय की पत्ती को निश्चित अनुपात में डाला , चाय को बहुत देर तक पकाया भी नहीं। चाय बनने के बाद मैंने दादी, मम्मी, पापा को पिलाई। उन्होंने कहा कि चाय सचमुच बहुत अच्छी है। मैंने भी चाय का स्वाद चखा। पहली बार में चाय भले ही अच्छी न बनी हो, लेकिन मैं अब तक सीख चुकी थी कि कुछ भी करने के लिए शौक के साथ उसके विषय में सम्पूर्ण जानकारी जरूरी है।

सिन्धुजा मिश्रा (X-H)

पिता का संघर्ष

एक व्यक्ति के जीवन में पिता की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हालाँकि बच्चे को जीवन तो माँ देती है, परन्तु पिता उसके जीवन को संभालने के लिए स्तंभ की तरह डटे रहते हैं। पिता वह वृक्ष है जिसकी स्नेह की छाया में बच्चा अपने आपको बहुत सुरक्षित महसूस करता है। पिता का अर्थ होता है–अनुशासन, सहनशीलता, संघर्ष, सुरक्षा और त्याग। इन्हें हम पिता के पर्याय मानते हैं। स्नेह का ऐसा अथाह सागर शायद ही कहीं देखने को मिले। वे ही एक छोटे बच्चे की अँगुली पकड़कर चलना सिखाते हैं। एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी सभी खुशियों का त्याग कर अपने बच्चे की खुशियाँ पूरी करते हैं। पिता साक्षात् त्याग की मूर्ति है। वे हमेशा प्रसन्न रहने की सीख देते हैं। पिता के अन्दर प्रेम, सहनशीलता, समर्पण और संघर्ष की शक्ति होती है। खुद खर्च न करके अपनी जमा पूँजी अपने बच्चों के भविष्य में लगा देते हैं। मजबूर होते हुए भी किसी प्रकार की कमी व समस्या नहीं होने देते। पिता का मेरे जीवन में सर्वोच्च स्थान है।

शिवाजी पटेल (X-K)

मेरे स्कूल का पहला दिन

मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ । मैंने पिछले साल ही अपने नए स्कूल रेडिएण्ट एकेडमी में प्रवेश लिया है। इस स्कूल में पढ़ते हुए मुझे छः महीने से अधिक हो गया। मुझे आज भी स्कूल का वह पहला दिन याद है। वह दिन मेरे लिए उत्साह और संशय से भरा था। मैं अपनी नई पुस्तकों, नई यूनीफार्म, वाटर बॉटल के साथ स्कूल जाने के लिए तैयार थी। मैं खुश तो थी लेकिन कोरोना जैसी महामारी को लेकर जो तमाम हिदायतें थीं। उनका भी पालन करना था। मैंने अपना एडमीशन तो पाँच महीने पहले ही ले लिया था, लेकिन लॉकडाउन की वजह से स्कूल नहीं जा पा रही थी। मैं पहले दिन बस में बैठकर स्कूल पहुँची तो मुझे बहुत अच्छा लगा। स्कूल पहुँचने के बाद मुझे पता नहीं था कहाँ जाना है। मैं बाकी बच्चों के साथ कैसे भी स्कूल कैम्पस में पहुँच गई। स्कूल प्रांगण की हरी–भरी घास, ऊँचे–ऊँचे अशोक के पेड़, फूलों से सजी क्यारियाँ, पंक्तिबद्ध होकर प्रार्थना सभा में जाना देखकर बहुत अच्छा लग रहा था। शांतिपूर्वक प्रार्थना सभा के बाद मैं कमरा नं. 205 अपनी कक्षा में जा पहुँची। पहले कालांश में मनीष सर गणित पढ़ाने के लिए आए। उसके बाद एक–एक करके दूसरे विषयों के अध्यापक आते गए। मुझे बहुत अच्छा लगा, जब सभी अध्यापकों ने मेरे जैसे अन्य नवप्रवेशी छात्रों का परिचय सभी से कराया। उस दिन गेम्स पीरियड में स्कूल स्टेडियम जाने का मौका मिला। यहाँ बच्चों की उछल कूद देखते ही बनती थी। वहाँ हम सिर्फ दूसरों को खेलते देखते ही रहे। मेरी ज्यादा किसी से बातचीत नहीं हुई। सबकुछ शांत पूर्वक हो रहा था। मास्क लगाकर रहना जरूरी था। कुछ छात्रों से थोड़ी–बहुत जान पहचान हुई। इसके बाद हम लोगों की छुट्टी हो गई। इसके बाद हम लोग बस में बैठकर घर की ओर रवाना हो गए। हम लोगों को आगमन पहली शिफ्ट में हुआ था। इसके बाद पता चला कि दूसरी शिफ्ट में स्थानीय बच्चों की कक्षाएँ चलेंगी।

श्रेया सिंह (X-K)

नारी मेरा नाम

नारी का है नाम मिला,
सच करके दिखलाती हूँ।
कितना भी तुम रोको मुझको,
मैं आगे ही बढ़ जाती हूँ।
ठोकर खाकर जीना सीखा,
संघर्ष करना सिखलाती हूँ।
अँधेरे में दिया जलाकर,
सबको राह दिखाती हूँ।
पर्वत जैसी बाधा को भी,
पार मैं कर जाती हूँ।
झुकना न सीखा है मैंने,
न ही मैं भय खाती हूँ,
गिरकर उठना सीखा है,
हर विपदा में मुस्काती हूँ।
नारी का है नाम मिला,
सच करके दिखलाती हूँ।

रिया सिंह (XII-B)

जिन्दगी और परिश्रम

इधर–उधर तू न भटक,
लक्ष्य अपना निर्धारित कर।
क्षण–क्षण की तू कीमत रख,
कुछ करना है तो मेहनत कर।

लगातार तू कर परिश्रम,
फल तो तुम्हें मिलेगा ही।
एक फूल मुर्झाया अगर,
दूसरा तो खिलेगा ही।

हार नहीं मानना जल्दी,
लगे रहना दिन–रात।
वो समय आएगा तब,
जो होगा सबसे खास।

आज परिश्रम कर लो तुम,
अपने मन को समझाकर।
फिर जब मिलेगा फल,
बिताना जिन्दगी मुस्करा कर।

रास्तों की मुसीबतों को,
झेल कर तुम दिखाना।
देखते रह जाए सब,
एक छलांग ऐसी लगाना।

रसिका पटेल (XI-E)

दिल करता है

आज फिर स्कूल जाने का दिल करता है,
सुबह–सुबह जल्दी उठ नहाने का दिल करता है।
स्कूल ड्रेस पहनकर टाई लगाने का दिल करता है,
लाइन में लगकर प्रेयर गाने का दिल करता है।

धक्का दे आगे बढ़ जाने का दिल करता है,
कागज के ऐरोप्लेन उड़ाने का दिल करता है।
दूसरे का टिफिन खाने का दिल करता है,
मैम के सवालों पर नजर झुकाने का दिल करता है।

होमवर्क न करने और बहाने का दिल करता है,
सोशल साइंस के पीरिएड में सोने का दिल करता है।
छुट्टी के इंतजार में बेल बजाने का दिल करता है,
दोस्तों के साथ गप–शप करने का दिल करता है।
सब कुछ भूलकर मस्त होने का दिल करता है,
आज फिर स्कूल जाने का दिल करता है।

वर्तिका (XI-G)

जीवन का सार

क्या लिखूँ, कुछ खास नहीं है
बताने को कोई बात नहीं है
अभी हमने देखा ही क्या है
पर अब तक के अनुभव क्या कम है।
हर शिक्षक की बात अलग है
सबका अपना मिजाज अलग है
सबका अपना–अलग सबक है
सीख लो! जान लो–
जो मिले सबक तो अमल करो
वह बनता जीवन का आधार है
जो अवसर है तुमने पाया
व्यर्थ इसे तुम न गँवाना
सपनों के पथ पर कदम बढ़ाना
जीवन का अध्याय शेष है
सद्विचार संजोना विशेष है।

सोनाली पाल (XII-D)

गर्मी का एक दिन

कई बार किसी ऋतु विशेष का प्रकोप इस सीमा तक बढ़ जाया करता है कि आम आदमी और प्राणी के लिए प्रायः उसे सह पाना कठिन हो जाया करता है। महाराष्ट्र के जलगाँव जिले में वह शायद जून का महीना था। रात से ही भीषण गर्मी के आसार प्रकट होने लगे थे। दिन निकलने तक हवा एकदम बंद हो गई थी। कहीं पत्ता तक भी हिलता नजर नहीं आ रहा था। सूर्य निकलने के साथ गर्मी का ताप भी बढ़ने लगा। बार–बार कंठ सूखने लगता । पानी पीते ही कुछ देर बाद पता चलता कि पसीना बनकर वह बह गया है और पानी पीने की इच्छा होती। बिजली के पंखों की हवा भी निरंतर गरम होती जा रही है। जैसे दोपहर का सूर्य सिर पर आया। अचानक बिजली बंद हो गई। तब कुछ क्षण बाद ही यह महसूस होने लगा कि अब जैसे हमारी सांसों का चलना भी बंद हो जाएगा। हवा के एक झोंके के लिए भी सभी तरसने लगे। लगा शरीर का अस्तित्व ही पसीना बनकर बह जाएगा। पानी–पानी और पानी। पर यह क्या? नल खोला कि नहा लें और घड़ों में पानी भर लें पर नल ने साफ जबाब दे दिया। बिजली के साथ नलों से पानी आना भी बंद हो गया था। कहावत है–करेला और नीम चढ़ा–शायद इसी स्थिति को कहते हैं। आसपास के सभी लोगों का कमरों में बैठ पाना असंभव हो जाने पर बाहर दीवारों, पेड़ों आदि की छाया में चक्कर काटते एक ही बात कह रहे थे, उफ! कितना गरम दिन है आज। पर घरों, कमरों के बाहर भी तो कहीं खड़े हो पाना संभव नहीं था। बाहर इतने पेड़–पौधे भी तो नहीं थे। तपिश के मारे वहाँ भी बुरा हाल हो रहा था। हमने देखा आसपास के पेड़ों पर बैठे पक्षी तपिश से झुलस रहे थे। आसपास के सभी जानवर प्यास के मारे तरस रहे थे। उस समय हमें याद आ रहा था, कैसे मीलों दूर जा–जा कर महिलाएँ तपती धूप में पानी भरने जाती हैं। खैर, किसी तरह शाम हो गई। लोगों के घरो में जितना पानी था वह खत्म हो चुका था। अब सब लोग एक बूँद पानी के लिए तरस रहे थे और यहाँ बिजली–पानी का अता–पता नहीं था। तभी एक हवा की लहर चली और पानी की बूँदें गिरना शुरू हो गई। देखते–देखते बारिश तेज होने लगी। बच्चे बाहर जाकर बारिश में खेलने लगे। तब जाकर शरीर को विश्राम मिला।

अंशिका यादव (VI-C)

जीवन का सूत्र

जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी हल कर सकने का विश्वास ही हमारी सकारात्मक सोच है। मुश्किल से मुश्किल दौर में भी हिम्मत बनाए रखना हमारे सकारात्मक सोच की शक्ति है। किसी भी मुश्किल कार्य को करने की हिम्मत भी हमारे सकारात्मक सोच से ही मिलती है। हम किसी काम को जितने ज्यादा सकारात्मकता से करेंगे काम उतना ही सटीक और सफल होगा। जीवन की विषम परिस्थितियों में सकारात्मक सोच न होने के कारण बहुत से व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं, और अपना बहुत बड़ा नुकसान कर बैठते हैं। आज तक के सभी सफल व्यक्तियों की सफलता का राज कहीं न कहीं उनकी सकारात्मक सोच है। सकारात्मकता केवल हमारी सफलता की ही नहीं बल्कि हमारे अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी भी है, इसलिए हमें सदैव सकारात्मक विचारों को अपने मन में प्रवेश करने देना चाहिए।

वैभव सिंह (VI-C)

मनुष्य के चार वर्ग

एक दिन शिष्यों ने गौतम बुद्ध से पूछा– भगवन ! मनुष्य के कितने वर्ग हैं ? गौतम बुद्ध ने उत्तर दिया – ''प्रिय शिष्यों ! एक वे, जो अपना ही लाभ देखते हैं, भले ही इससे दूसरों को कितनी ही हानि उठानी पड़ती हो। दूसरे वे, जो औरों का भला करते हैं। तीसरे वे, जो अपना भी भला करते हैं और दूसरों का भी। चौथे वे प्रमादी हैं, जो न स्वयं सुखी रहते हैं न दूसरों को सुखी रहने देते हैं।'' बुद्ध ने निष्कर्ष रूप में कहा– मेरी समझ में वे श्रेष्ठ हैं, जो अपने साथ–साथ दूसरों का भी भला करते हैं। इस प्रकार उनके शिष्यों की जिज्ञासा का समाधान हुआ।

तनु पाण्डेय (VI-C)

कोई कहता है

कोई कहता है ये जीवन अकेला
नहीं मानता मैं कि जीवन अकेला
न जाने हैं कितने कई रंग इसमें
ये सूरज की लाली ये रातों की काली
ये पेड़ों की छाया में जीवन की माया
हवाओं का बहना इन फूलों का खिलना
तारों की टिमटिम ये मेघों की गरजन
है लगता मुझे ये हमारी ही धड़कन
मेरे मीत सुन ले ये मेरी कहानी
ये जुगनू ये बादल ये पत्थर ये पानी
नहीं जानता कौन मेरे लिए है
है लगता मुझे ये मेरी है निशानी
जुगनू की टिमटिम ये बूँदों की छनछन
फूलों की महमह ये भौंरों की गुनगुन
हवाओं के झोंको से लहराता तृण–तृण
लगे हैं मुझे, सभी ये रिझाने
कोई कहता है मैं कहीं खो गया हूँ
मेरा आसमाँ जाने कहाँ छुप गया है
नहीं लगता मुझको कि मैं हूँ अकेला
न जाने भीड़ में कब से घिरा हूँ।

सृष्टि ऐश्वर्या (XI-F)

कुछ करना है

कुछ करना है तो डटकर चल
दुनिया से जरा हटकर चल
लीक पर तो सब चलते हैं
कभी इतिहास पलटकर चल।
बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के दाम कैसा?
जब तक न हासिल हो मंजिल
तब–तक रास्ते में आराम कैसा?
अर्जुन–सा तू लक्ष्य बना
फिर उसी–सा संधान कर
सोच को साकार कर
संघर्षों से न हारकर
किसी से न गिला कर
तू हौसले की उड़ान भर।

श्रुति पटेल (VII-B)

मिलकर पेड़ लगाएँ

धरती की बस यही पुकार,
पेड़ लगाओ बारंबार।
हरी–भरी यह धरा करें,
जन–मन का दुःख हरा करें।

धरती पर हरियाली हो,
जीवन में खुशियाली हो।
वृक्ष धरा की शान हैं,
जीवन की मुस्कान हैं,
पेड़–पौधों को पानी दें,
जीवन को खुशहाली दें।

आओ सब मिल पेड़ लगाएँ
पेड़ लगाकर जग महकाएँ,
जीवन सुखी बनाए हम,
आओ पेड़ लगाए हम।

शीतल सिंह (VII-E)

मंजिल का सफर

तन्हा खड़ी हूँ रास्ते पर
आँखों में ख्वाब लिए
सोच रही हूँ थमकर पल भर
मैं कहाँ सही, मैं कहाँ गलत
क्यों कोई हरदम रोके–टोके
क्यों कोई मेरी राह में आए
क्यों मैं इसमें समय गवाऊँ
कुछ करके क्यों न दिखाऊँ
कुछ करने का जज्बा है मुझमें
हाँ, होती है कमियाँ सबमें
हिम्मत बाँधे खड़ी हूँ मैं
मुश्किलों के सामने अड़ी हूँ मैं
कई मुकाम करना है तय
न रख मन में कोई भय
गिरुँगी तो फिर उठ जाऊँगी
तभी तो अपना मुकाम पाऊँगी।

मरियम सेख (X-C)

कोरोना काल

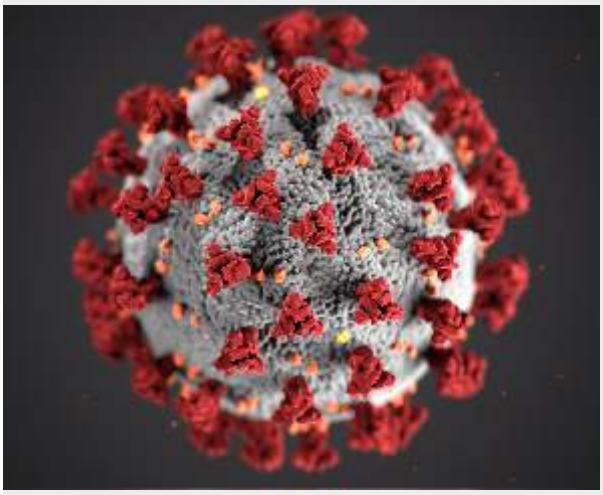

ऐसा काल चला विश्व में, जीवन स्मरणीय बना दिया।
जो चूक गया, टूट गया, जो जान गया वह सीख गया,
भाषा साहित्य के आँगन में अनगिनत विद्यालय खुले रहे,
ऐसा काल प्रचंड चला कितनों के पैर उखड़ गए,
जो उखड़ गया वह बिगड़ गया, जो डटा रहा वह भरा रहा,
डिजिटल मार्केटिंग से भारत ने सपनों को साकार किया।
दूरस्थ शिक्षा अपनाकर सबके हाथों फोन थमा दिया,
ऑनलाइन क्लासेस ने बच्चों में हाहाकार मचा दिया,
बच्चों ने भी तन–मन से नए–नए अनुसंधान किए,
गूगल–यूट्यूब आदि से सपनों को साकार किया,
नई शिक्षा तकनीकी ने हमको आगे बढ़ा दिया,
संचार के नए प्रयोगों ने नए–नए आयाम दिए,
जीवन की मजबूरी में नए–नए आविष्कार हुए।
धन–विवेक से हीन हुए, रोजगार विहीन हुए,
ऐसे लाचार मित्रों ने फोन लेने को मजबूर हुए,
कभी निरीक्षण कभी परीक्षण वर्कशीट के दौड़ हुए,
बच्चे भी नेट वीक बता खेलों में मशगूल हुए,
सरकारी आदेशों से जब शिक्षालय गुलजार हुए,
नई उमंगे नए जोश से गुरु–शिष्य के मिलन हुए,
देख अधूरे क्रियाकलाप को शिक्षक जी चकित हुए,
कोरोना काल के अंतराल ने सबको पंगु बना दिया।
ऐसा काल चला विश्व में जीवन स्मरणीय बना दिया।।

श्यामदेव विश्वकर्मा (TGT-Hindi)

फुटपाथ पर सोया आदमी

जब आपके हाथ में पैसा होता है तब आप भूल जाते हैं कि आप कौन हैं? लेकिन जब आपके हाथ खाली होते हैं तो सम्पूर्ण संसार भूल जाता है कि आप कौन हैं? यह कथन पूर्णतः सत्य है। इसकी अनुभूति मुझे तब हुई जब मैंने एक दिन फुटपाथ पर सोते हुए एक विकलांग व्यक्ति को देखा। उसकी आँखों में दूर–दूर तक गहरा दर्द बैठा हुआ था। अपना पेट पालने के लिए वह लोगों से भीख माँगता और जो कुछ भी मिलता उसी से अपना गुजारा करता। वह सदैव याचना भरी नजरों से लोगों को निहारता रहता। मुझे नहीं मालूम कि उसका क्या अतीत था? किन परिस्थितियों में वह इस दशा को पहँचा? उसके परिवार के लोग कहाँ गये? ये सब सोचकर मैं परेशान हो उठती थी। मैं सोचती थी कि क्यों कोई उसकी सहायता नहीं करता, क्यों बार–बार माँगने पर भी लोग उसको खाने को नहीं देते। क्या उसकी इस प्रकार उपेक्षा करना मानवता के विरुद्ध नहीं है। ये सारे विचार मेरे मन में आते और चले जाते। पर, मैं चाह कर भी कुछ नहीं कर सकती थी। कुछ दिनों बाद मैं उसी मार्ग से होकर गुजर रही थी कि मैंने वहाँ भीड़ एकत्रित देखी। मैं पास गई यह जानने के लिए कि वहाँ क्या हो रहा है। पास जाकर देखा तो उस फूटपाथ पर रहने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी थी, लोगों से पूछा तो पता चला कि भूख और ठण्ड के कारण वह चल बसा। यह सब देखकर मेरे दुख की कोई सीमा न थी। मुझे दुख था कि हजारों की भीड़ में भी मैं उसके लिए कुछ न कर सकी। मैं आज भी सोचती हूँ कि समाज में ऐसे ही कितने लोग हैं और क्या उनकी यही नियति है?

अज़किया सालिम (X-H)

चलते रहो

मार्टिन लूथर किंग ने कहा था –अगर तुम उड़ नहीं सकते तो दौड़ो, अगर दौड़ नहीं सकते हो तो चलो, अगर तुम चल नहीं सकते हो तो रेंगो पर निरंतर आगे बढ़ते रहो। अपनी सोच और दिशा बदलो सफलता तुम्हारा स्वागत करेगी।

रास्ते पर कंकड़ ही कंकड़ हो, तो भी एक अच्छा जूता पहन कर चला जा सकता है, किंतु एक अच्छे जूते के अंदर एक भी कंकड़ घुस जाए तो एक अच्छी सड़क पर भी कुछ कदम चलना मुश्किल है। यानी हम बाहर की चुनौतियों से नहीं, अपने भीतर की कमजोरियों से हारते हैं।

आयूष सिंह (VI-C)

मानवता का करें परागण

एक किसान अपने खेत में अच्छे किस्म की मक्का की फसल उगाता था। उसकी उत्कृष्ट पैदावार से लोग आश्चर्य चकित रह जाते थे। उसे हर साल उत्कृष्ट मक्का उगाने के लिए पुरस्कार मिलता था। एक बार उसकी प्रशस्ति सुनकर विदेश से कुछ विज्ञानी आए, उससे बेहतरीन उपज का राज पूछा। किसान ने मुस्कराते हुए जबाब दिया, सबसे बड़ा राज यह है कि जिन बीजों से मैं उत्कृष्ट मक्का उगाता हूँ उन्हें मैं अपने आसपास के किसानों में भी बाँट देता हूँ। विज्ञानियों ने आश्चर्य से किसान से पूछा आपके सबसे अच्छे बीजों के कारण ही तो आपको हर साल पुरस्कार मिलता है, उन्हीं बीजों को साथी किसानों में बाँट देने में भला कैसी अकलमंदी है? किसान बोला–जब मक्का की फसल पकती है तो हवा उनके परागकणों को दूर–दूर के खेतों तक ले जाती है। यदि मेरे पड़ोसी घटिया मक्का उगाएंगे तो परागण के कारण मेरी मक्का की गुणवत्ता प्रभावित होगी। अच्छी फसल उगाने वाले किसान को हमेशा साथी किसानों की मदद करनी चाहिए।

कहानी की सीख यह है कि– अगर आप खुश और समृद्ध रहना चाहते हैं तो आपको दूसरों की भी परवाह करनी चाहिए।

फूटी प्रजापति (VI-C)

धरती माँ

सुन ले आज धरा की पीड़ा, मानव तू अज्ञानी है।
ये तेरी माँ, धरती माँ की दुख से भरी कहानी है।
वो कहती–आ जा, आँचल में तुझको आज छुपा लूँ मैं।
आ–आ मेरे पास गले से तुझको आज लगा लूँ मैं।
तेरी भूख मिटाने को कितने वन–उपवन तुझे दिए।
काट–छाँट कर सबको तूने बस अपने घर बना लिए।
मेरी नदियों के पानी में भी तूने विष घोल दिया।
अपनी माँ को गन्दा करके तूने खतरा मोल लिया।
कैसे तुझको पालूँगी?
कैसे तेरा ध्यान रखूँगी, क्या मैं तुझे खिलाऊँगी?
कड़ी धूप में चलना होगा, नहीं मिलेगी छाँव कहीं।
पंथ कटीला हो न जाये घायल तेरे पाँव कहीं।
मेरे लाल ठहर जा थोड़ा, ये विकास की राह नहीं।
गहरे गड्ढे हैं विनाश के, क्या तुझको परवाह नहीं।
तू ही नहीं रहेगा जब तो किस पर गर्व करूँगी।
मैं तेरी माँ हूँ बिन तेरे कैसे धीर धरुँगी।

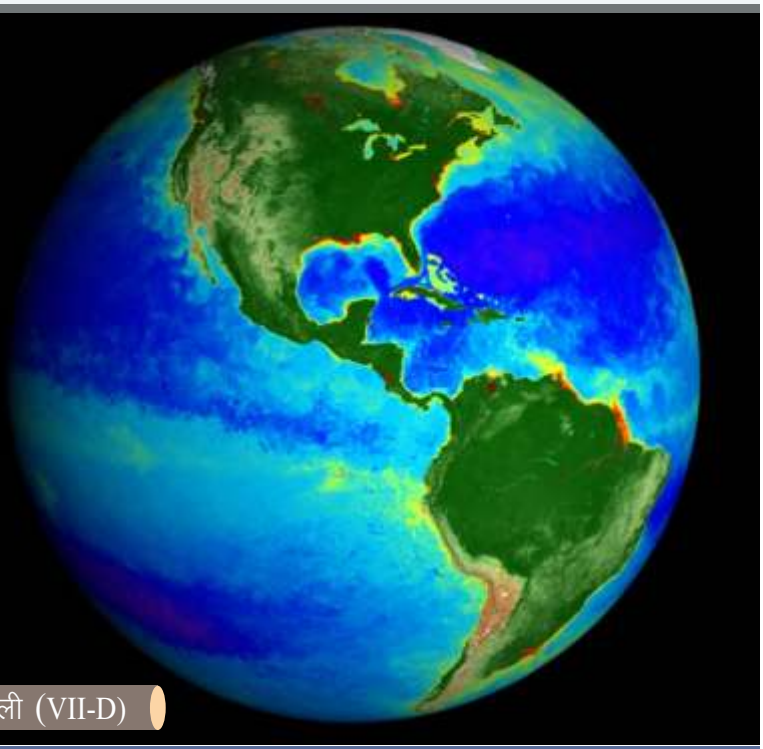

गीतांजली (VII-D)

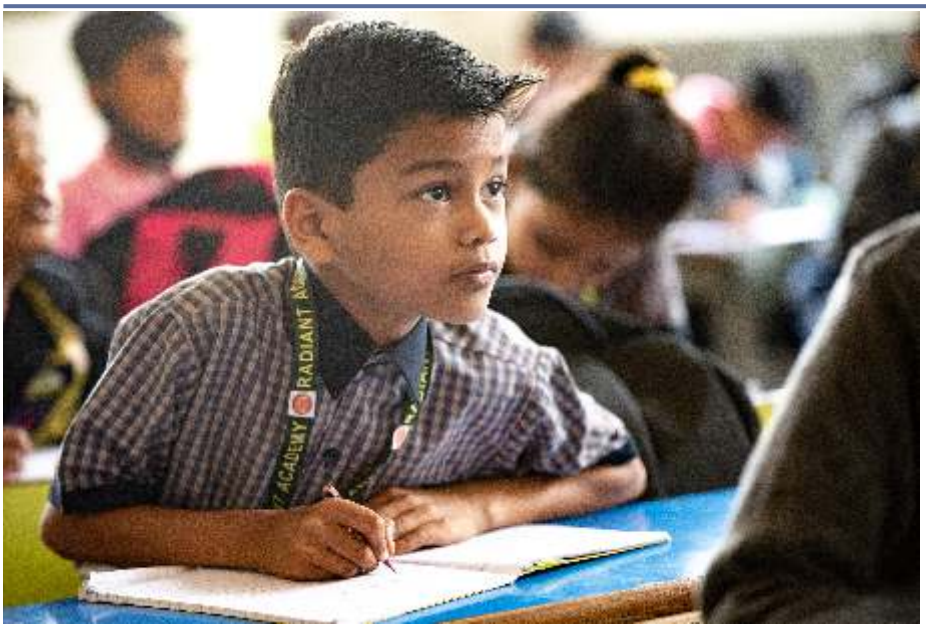

शिक्षक और शिक्षण प्रक्रिया

शिक्षक सदैव समाज में पूजनीय रहा है। शिक्षक का कार्य समाज के पथ प्रदर्शक के रूप में सिखाने वाला और आदर्श के रूप में रहा है। शिक्षक समाज का दर्पण व राष्ट्र निर्माता होता है।

शिक्षा का कार्य छात्रों में जीवन का निर्माण करना होता है। प्राचीन काल से ही शिक्षक के सामने बड़ी चुनौती कक्षा में शिक्षण को प्रभावशाली रूप को बनाए रखना रहा है। छात्र शिक्षण को तनाव के रूप में न लेकर खेल के रूप में लें उत्साह व मनोरंजन के रूप में लें। ऐसा वातावरण कक्षा कक्ष में करने की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है।

सभी मनुष्यों में सीखने की बुनियादी चाह होती है और शिक्षा का कार्य इसी दिलचस्पी को आगे बढ़ाना है। इसमें निम्न कदम शामिल हैं–

1. सीखने के लिए एक सकारात्मक माहौल का निर्माण
2. सीखने वाले के उद्देश्य को स्पष्ट करना
3. सीखने के संसाधनों को संगठित करके उपलब्ध करना ।
4. सीखने के बौद्धिक एवं भावनात्मक पक्षों में संतुलन कायम करना
5. सीखने वालों के साथ बिना उन पर हावी हुए विचार और भावनाओं का साझा करना।

कक्षा में शिक्षण तभी प्रभावी होता है जब सीखने की प्रक्रिया में छात्र पूरी तरह हिस्सेदारी ले उसके स्वरूप और दिशा पर उनका पूर्ण नियंत्रण हो और खुद सीखने की इच्छा हो। एक शिक्षक के रूप में जब अध्यापक पूर्व तैयारी के साथ जाता है तभी वह उपरोक्त कार्य पूरा कर पाता है और इसके अनेक लाभ हैं–

आत्मविश्वास में वृद्धि– जिस विषय वस्तु को अध्यापक के रूप में आपको कक्षा में बच्चों के सामने प्रस्तुत करना हो उसे पहले से अध्ययन किए हो। उसके मुख्य बिन्दुओं पर विचार किए हो। इससे आप में आत्मविश्वास आएगा। बच्चों के सम्मुख स्पष्ट रूप से अपनी बात रख पाएंगे और बच्चे भी उस विषय वस्तु सीखने में रुचि लेंगे। उनका ध्यान आपकी विषय वस्तु पर होगा। ऐसा न करने पर कक्षा में समय प्रबंधन में, अनुशासन व सीखने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है।

प्रस्तुतीकरण– पूर्ण तैयारी के साथ कक्षा में जाने पर अध्यापक का प्रजेंटेशन यानी प्रस्तुतीकरण प्रभावशाली होता है, कक्षा कक्ष का शिक्षण स्तर सकारात्मक दृष्टि से सुधरता है। कक्षा बोझिल नहीं होती। बच्चे अध्यापक के उत्साह को अपने सामने एक आदर्श के रूप में रखते हुए समझते हैं और खुद भी उत्साहित होकर शिक्षा ग्रहण करते हैं। धैर्य– कक्षा कक्ष में अध्यापक विषय की पूर्व तैयारी से एक लाभ यह होता है कि छात्र अध्यापक की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं। उनमें धैर्य और अनुशासन होता है। यह प्रभावी शिक्षण के लिए अति आवश्यक है।

अच्छा श्रोता–अध्यापक द्वारा विषय वस्तु को लेकर पूर्व नियोजित तैयारी होने पर सर्वाधिक लाभ यह होता है कि वह एक अच्छा श्रोता बनता है। छात्रों के प्रश्न जिज्ञासा को ध्यानपूर्वक सुनकर उनके उत्तर देता है। कक्षा शिक्षण सुचारू रूप से चलती है। अध्यापक छात्रों के प्रश्नों से घबराहट वाली स्थिति में नहीं आता है। स्टीक उत्तर मिलने पर छात्रों का मनोबल बढ़ता है और उनके सीखने की प्रक्रिया में सुधार होता है।

जीवंत कक्षा – कक्षा में नीरस वातावरण नहीं रहता है और तैयारी से छात्रों के मानसिक स्तर की जानकारी रहती है। विभिन्न प्रकार के शिक्षा तकनीक व उदाहरण पर कार्य करके जाने से कक्षा का वातावरण सकरात्मक और उत्साहवर्धक रहता है। इसका प्रभाव कक्षा में रचनात्मक रूप से दिखाई देती है।

कक्षा का प्रत्येक छात्र अपनी भागीदारी देने का प्रयास करते हैं इससे बच्चे खुद भी सीखने की जिम्मेदारी और तैयारी के साथ कक्षा में आएंगे।

मूल्यांकन– छात्रों का मूल्यांकन अच्छी प्रकार से किया जा सकता है। पूर्व निर्धारित विषय वस्तु से बच्चों के स्तर के अनुरूप प्रश्नावली व क्रियाकलाप कराए जा सकते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि शिक्षक को छात्र अपना हीरो समझते हैं। उनका प्रभावी शिक्षण व पूर्व तैयारी, मनोरंजक शिक्षा छात्रों के सीखने की प्रक्रिया में तेजी लाता है। अध्यापक के व्यवहार का छात्रों पर सीखा प्रभाव पड़ता है, उसके शिक्षण कौशल से शिक्षण सकारात्मक दृष्टि से सुधरता है। कक्षा में जाने से पूर्व अध्यापक को पता होना चाहिए कि क्या अध्यापन करने जा रहे हैं? क्यों अध्यापन करने जा रहे हैं? कैसे अध्यापन करने जा रहे हैं? बच्चों का स्तर कैसा है और उस विषय वस्तु का प्रारंभ किस प्रकार से किया जाना है।

अंत में निष्कर्षतः यही कह सकता हूँ कि नए कौशल, नई प्रवृत्ति और नए तरीके से विचार करके जाने पर ही बच्चों में सुधार लाया जा सकता है और हम एक अध्यापक के रूप में आत्मसंतुष्टि पाते हुए सफल होते हैं।

पंकज कुमार सिंह (TGT Hindi)

AISSE (2020-21) X

SALONI GOYAL
97%

PRATEEKSHA MISHRA
96.8%

RASHIKA PATEL
96.4%

AARZAM ABBAS
96.2%

TANUJA DWIVEDI
95.8%

YATHARTH MISHRA
95.8%

ABHINAV KUMAR MAURYA
95.8%

ISHAN TRIPATHI
95.4%

AYUSH SINGH
95.4%

UTKARSH MISHRA
95.2%

ANSH MISHRA
95%

SAZIYA FATIMA
95%

AISSCE (2020-21) XII

NISHTHA MISHRA
98.8%

SALONI SONI
98.8%

NEHA YADAV
97.6%

SHIVA GUPTA
97.4%

NAMAN PATEL
96.6%

PRATIKSHA VERMA
96.6%

VIPUL YADAV
96.6%

NAVNEET YADAV
96.6%

ANNUAL SPORTS MEET 2021-22

INTER HOUSE SPORTS COMPETITION

Event	Participant	Class	House	Participant	Class	House	Participant	Class	House
50 m Boys & Girls	Ali Raza Eram Fatima	5-A 4-B	Raman Teresa	Pulkit Raj Pragya Vishwa	5-C 5-B	Raman Raman	Prashant Yadav Surabhi Pandey	5-C 4-B	Teresa Lohia
100 m Boys & Girls	Nikhil Kumar Stuti Yadav	8-B 6-D	Teresa Lohia	Ayush Singh Yadav Shivani Tripathi	8-B 7-C	Raman Lohia	Abhinav Shreya Pal	8-C 6-B	Raman Teresa
200 m Boys & Girls	Abhinav Mishara Shreya Yadav	8-C 6-B	Raman Lohia	Akshansh Apoorv Sweta Pandey	8-E 6-C	Raman Raman	Vikash Yadav Rashmi Roshan	8-F 8-A	Krishnan Lohia
400 m Boys & Girls	Suryansh Singh Stuti Yadav	8-F 6-D	Raman Lohia	Ujjwal Singh Swati Gautam	8-F 7-D	Raman Krishnan	Ayush Yadav Pratishtha Maurya	8-A 7-A	Lohia Lohia
Long Jump	Ayush Singh Rashmi Roshan Safdar Abbas Shagun Yadav	8-B 8-A 5-A 4-B	Raman Lohia Lohia Raman	Shiva Sahani Pratigya Maurya Ali Mohd Aarushi	8-B 7-D 5-C 4-A	Krishnan Raman Krishnan Lohia	Vikash Yadav Nancy Singh Piyush Yadav Anshika Nishant	8-F 6-C 5-A 5-B	Krishnan Teresa Raman Krishnan
Shot Put	Prince Yadav Sakshi Yadav	7-B 8-B	Teresa Raman	Astitva Mangal Anshika Upadhyay	6-D 8-C	Lohia Teresa	Prashant Pandey Shreya Yadav	8-A 6-A	Raman Raman
Relay Race	Akshansh Apoorv Suryansh Singh Ayush Yadav Abhinav Mishra Rashmi Roshan Stuti Yadav Shivani Tripathi Shreya Yadav	8-E 8-F 8-B 8-C 8-A 6-D 7-C 6-B	Raman Raman Raman Raman Lohia Lohia Lohia Lohia	Atul Prajapati Ali Hassan Vikas Yadav Shiva Sahani Prtigya saman Fatima Unnati Yamani Sweta Pandey	8-B 8-A 8-F 8-B 7-D 6-A 7-E 6-C	Krishnan Krishnan Krishnan Krishnan Raman Raman Raman Raman	Hasan Akabar Anshaj Patel Harshit Mishra Shivansh Yadav Amul Priyam Shreya Singh Shreya Pal Shagun Singh	. 7-B 7-D 6-C 8-F 8-B 8-C	Lohia Lohia Lohia Lohia Teresa Teresa Teresa Teresa
Cricket Ball Throw Boys & Girls	Md. Hamza Sheetal Vishwak.	5-D 5-A	Raman Lohia	Saurabh Raj Vaishnavi Yadav	5-C 4-B	Raman Raman	Ali Mohd Akriti Yadav	5-C 5-C	Krishnan Krishnan
Spoon Race Boys & Girls	Prashant Yadav Aarya Yadav	5-C 4-C	Teresa Krishnan	Shaurya Tripathi Navya Pal	5-D 5-D	Teresa Lohia	Adesh Singh Paridhi Baranwal Aarya Chatruvedi	5-B 4-D 4-A	Raman Raman Krishnan
Three Leg Race Boys & Girls	Pulkit Raj Ali Raza Priyal Rai Aditi	5-C 5-A 5-D 5-D	Raman Raman Lohia Lohia	Yuvraj Soni Raunak Gupta Riya Agrahari Jahanvi	4-B 4-B 5-D 5-D	Raman Raman Raman Raman	Atharv Yadav Md. Haider Manu Shree Ekata Soni	5-A 5-B 5-C 5-D	Teresa Teresa Krishnan Krishnan

SCHOOL IN ACTION

CELEBRATION

INTER HOUSE CHAMPIONS

SCORE BOARD

Events	House			
	Raman	Lohia	Teresa	Krishnan
Co-Curricular Activities	118	132	144	108
Athletics	106	70	37	30
Total	224	202	181	138

STUDENT COUNCIL

SCHOOL APPOINTMENT

HEAD

Apurv Tripathi	(XII-A)
Kashish Jaiswal	(XII-I)

VICE HEAD

Utkarsh Tripathi	(XI-C)
Saloni Mishra	(XI-E)

SPORT CAPTAIN

Archita Yadav	(XII-C)
Manish Raj	(XII-K)
Surabhi Yadav	(XI-I)
Shashwat Mishra	(XI-E)

CULTURAL HEAD

Md. Kaif	(XII-A)
Vaishnavi Shrivastava	(XII-K)

VICE CULTURAL HEAD

Harsh Pandey	(XI-B)
Arya Singh	(XI-H)

DISCIPLINE HEAD

Saurabh Singh	(XI-I)
Vaishnavi Yadav	(XI-K)

LIBRARY CAPTAIN

Ritesh Yadav	(XII-B)
Ujjwal Pratap Singh	(VIII-D)

CABINET HEAD

Swapnil Singh	(XII-A)
Samridhi Chaurasia	(XI-E)

CCA CAPTAIN

Shivanshi Kasaudhan	(XI-F)
Parth Singh	(XI-A)

HOUSE CAPTAIN

Krishnan House

Apporva Baranwal	(XII-I)
Abhinav Kaushik	(XII-I)

Lohia House

Shivani Mishra	(XII-K)
Kartikey Mishra	(XII-H)

Teresa House

Tanushree Gupta	(XII-J)
Utsav Agrahari	(XII-C)

Raman House

Neeraj Soni	(XII-K)
Shristi Shukla	(XII-H)

ADIEU

Dear Students,

Believe in yourself, prove your mettle and chase your dreams.

Wishing you all the best for future endeavours !

XII-A

XII-B

XII-C

XII-D

XII-E

XII-F

XII-G

XII-H

XII-I

XII-J

XII-K

SCHOOL FACILITATORS

PRE-PRIMARY FACULTY

PRIMARY FACULTY

JUNIOR FACULTY

SECONDARY FACULTY

SENIOR SECONDARY FACULTY

OFFICE STAFF

CREATIVE STROKES

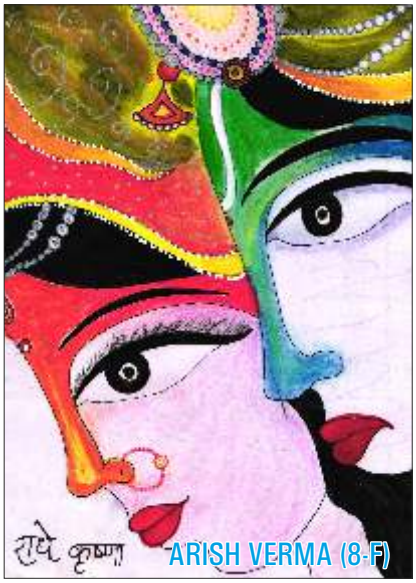

ARISH VERMA (8-F)

ALOK RANJAN (9-A)

ZAMAN ABBAS (6-D)

DEEPALI VERMA (7-A)

DARSHIKA SINGH (8-A)

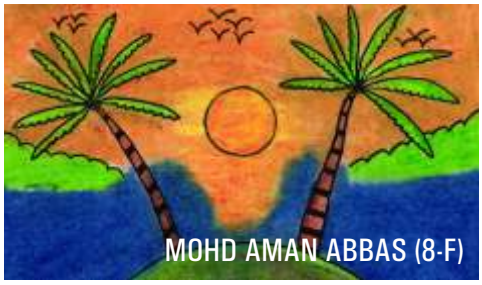
MOHD AMAN ABBAS (8-F)

PALLAVI YADAV (8-C)

NIVEDITA CHAUDHARY (8-E)

NABEELA SHAHID (7-C)

ANANYA AGRAHARI (8-C)

ABHINAV PANDEY (8-E)

ANU YADAV (6-A)

MANYA SINGH (7-D)

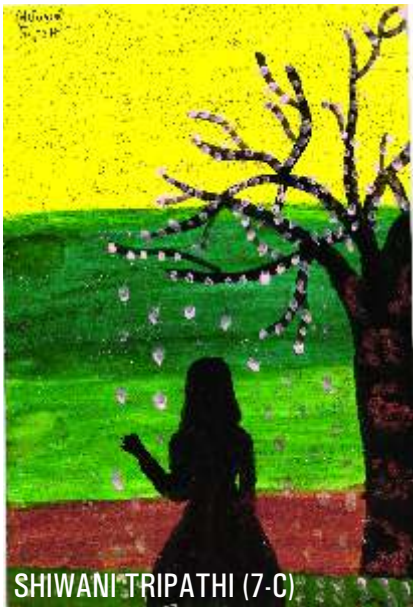
SHIWANI TRIPATHI (7-C)

SHRISTI MISHRA (7-E)

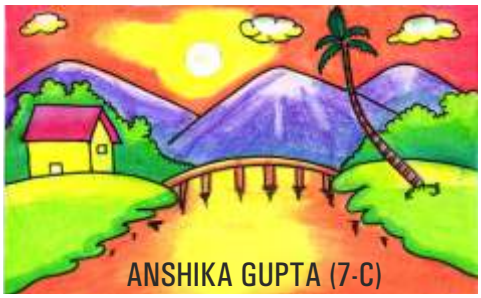
ANSHIKA GUPTA (7-C)

TABHISH HAIDER (7-E)

SHATAKSHI GUPTA (6-A)

DEVANSH YADAV (8-F)

FATIMA ZEHARA (8-A)

TANSI YADAV (7-D)

ISHAN NARAYAN TIWARI (9-C)

SRISHTI VERMA (9-H)

RANI YADAV (8-A)

DIVYA SHUKLA (7-E)

SRISHITI SINGH (12-K)

TAHZEEB FATIMA (9-H)